॥ श्रीः ॥

प्रवास-कुसुमावली

द्वितीय गुच्छ ।

मरुदेशीय, अग्रवंशी—

शिवचन्द्र भरतिया,

उपनाम

"चन्द्र कवि" विरचित ।

"सर्वथा व्यवहर्तव्यं कुतो ह्यवचनीयता ।
यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः ॥"

बम्बई,

"गुजराती" प्रेसमें मुद्रित ।

संवत् १९६४, शके १८२९

कीमत छ आना ।

३१४०

निज धर्म-वश जाति-
स्वदेश-भाषा-सुधार करना ही।
सबका कर्त्तव्य सदा
परहित किसको सुपुण्यकर नाहीं? ॥

दिग्दर्शन ।

निज कवित्त केहि लाग न नीका ?
सरस होऊ अथवा अति फीका ॥
जे पर भणित सुनत हरखाहीं,
ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं ॥

—तुलसीदास ।

गत वत्सरमें जब इसका प्रथम गुच्छ प्रकाशित हुआ तब मेरे प्रस्तावके अनुसार, गणवृत्तमें विशुद्ध हिन्दीकी कविता अल्प और ऐसी कविताका प्रचार भी अल्पतर, सिवाय शिरोलिखित महात्माके वचनानुसार रसिकजनोंका भी अभाव—इन कारणोंसे उसके सादर स्वीकारमें कुछ कुछ शंका थी । जो संस्कृतकी कविताके मर्मज्ञ हैं वेही इस कविताका आदर कर सकते हैं, और जो पुराने ढंगकी कविताके प्रेमी हैं उन्हें तो इसके पढ़नेहीमें दिक्कत होती है तब वे इसका कैसे आदर कर सकेंगे ? तथापि आजकल इस ओर हिन्दीप्रेमियोंका चित्त आकर्षित हुआ है इतना ही नहीं, वरंच काशीनागरीप्रचारिणी सभाने भी इस विषयमें एक रेगुलेशन पास कर दिया है, तथा अन्यान्य काव्यानुरागी महाशयोंने प्रथम गुच्छका सादर स्वीकार कर अभिनन्दन किया, जिसका सारांश अन्यत्र उद्धृत है—अतएव इस द्वितीय गुच्छके निर्माण करनेमें मुझको विशेष उत्साह हुआ ।

जिस समय राष्ट्रभाषा हिन्दी बननेका और वह वैसी बन जाय वहांतक भिन्न भिन्न भाषायें देवनागरी लिपिमें लिखी जानेके लिये आन्दोलन हो रहा है, नागरी प्रचारिणी सभायें इसकी उन्नतिके लिये दृढ परिकर हैं और अन्यान्य बंगाली महाराष्ट्र इत्यादि अन्य भाषाभिज्ञ महानुभाव भी हिन्दीकी ओर झुके हैं—तो क्या अब

गणमात्रासद कविता देशकी विशुद्ध हिन्दीके महापीठपर प्रतिष्ठा नहीं होनी चाहिये ! किसी कविने कहा है कि—

ते धन्यास्ते महात्मानस्तेषां लोके स्थिरं यशः ।
यैर्वा निबद्धानि काव्यानि ये वा काव्येषु कीर्तिताः ॥

अर्थात् जिन्होंने काव्यनिर्माण किये हैं अथवा जिनका काव्यमें वर्णन हुआ है वे धन्य हैं, वे महात्मा हैं और लोकमें उन्हींका यश स्थिर है—इसमें क्या सन्देह है ? यश, अर्थ, मङ्गल और उपदेशको करनेवाली सिवाय कविताके अन्य कौन है ? जगत्में कविता नहीं होती तो वेद, उपनिषद्, शास्त्र, स्मृति, पुराण आदि कल्पनातीत सैंकड़ों ग्रन्थ आज हमको कहांसे प्राप्त होते ? कविता ही एकमात्र हमारे देशकी कीर्ति लक्ष्मी, समृद्धि, धर्मस्थिति, ज्ञानप्रदायिनी और कल्याणकारिणी है ! कविता हीके प्रभावसे आज—पृथ्वीराजके समयकी, कबीरनानकके समयकी, सूरदास तुलसीदासके समयकी और अन्यान्य महात्माओंके समयकी हिन्दीभाषाका परिचय होके उस कालकी भाषास्थितिका दिग्दर्शन होता है ।

' कालस्य कुटिला गतिः ' इसी नियमानुसार जैसी जैसी इस देशकी अवनति होती गई वैसी वैसी परिस्थितिकीभी भिन्नता होती गई । एक दिन सर्वत्र देशभर मातृभाषा गीर्वाणका प्रचार था, पीछे थोड़े ही कालमें प्राकृतका प्रचार हुआ, होते होते अनेक भाषायें बनी ! बनता बनती दस बीस मील परभी उनमें भिन्नत्व हो गया !! कहिये, अब किस प्रकार भाषैक्य हो ? भारतके अतिरिक्त अन्यान्य देशोंकी ओर देखा जाय तो भाषैक्यसे सबका हृद्गतभाव सहज परिस्फुट होनेसे कैसा परस्पर एकमत है ?

आज हमारे सिर पर विद्याभिवप्रचारिणी शक्तिशालिनी न्यायशील गवर्नमेंटका शीतलछत्र है तो ऐसे शान्तकालमें हमारा परम कर्त्तव्य है कि प्रथम हम अपनी मातृभाषाका सुधार करें । हिंदुस्थानकी भाषा एक मात्र हिन्दी ही है, और यथार्थोच्चार वर्णमाला भी एक मात्र नागरी है । अब यथारुचि उसे कोई उर्दू कहे, कोई ब्रज कहे,

कोइ खड़ी कहे और कोइ विशुद्ध कहे—है तो हिन्दीकी हिन्दी ही। जिस भाषामें कविता प्रगल्भ दशाको पहुच जाती है वह भाषा परिष्कृत होके प्रधान बन जाती है। संस्कृतको तो रहने दीजिये—जरा बंगला, मराठी और गुजरातीकी ओर तो देखिये, कैसी उन्नत है? जैसी जैसी इन भाषाओंकी कविता प्रचलित भाषामें आविष्कृत होती गइ वैसी वसी अधिकाधिक अधिकृत होती हुई आज प्रधान बन गोर वान्वित हो रही है। ईश्वर कभी न कभी हमारी इस कुमारी भावहीना मुग्ध हिन्दीको भी भावपूर्ण साहित्यालंकृत कवितासे विभूषित कर प्रौढा और प्रगल्भ करेहीगा। क्यों कि—"कालो ह्यय निरवधिर्विपुला च पृथ्वी" काल निरवधि है और पृथ्वी विपुल है—इस भवभूतिकी उक्तिपर हमारा पूर्ण विश्वास है।

उस पतितपावन जगन्निवासका कोटिश धन्यवाद है कि इस स्थलवर्णनात्मक प्रवासकुसुमावलीका द्वितीय गुच्छ मेरे जैसे दोहदविज्ञानहीन अकुशल मालाकारके हाथ ग्रथित कराके अपने चरणारविन्दपर अर्पण कराया। वैसे ही प्रस्तुत प्रेमी महोदयगणका धन्यवाद है कि जिन्होंने इसके प्रथम गुच्छका सादर स्वीकार कर मुझे उत्साहित किया। इति शम्॥

इन्दोर सिटी,
१५-६-०७

परमविनीत—
शिवचन्द्र भरतिया।

Poets must be like Byron
That star of Liberty—
Whose pen solely devoted
To the noble Greece
Shattered that nation's
Shackles from the Ottoman yoke
Extol thy country—" Ashak" !
Guide, cheer and assist it
Poets must have at their heart
One grand aim to serve their native country

Ashak's G L chapter II

कवि अवश्य ही बायरन् जैसे हों कि जो स्वातन्त्र्यका सितारा था, जिसकी लेखनी श्रेष्ठ ग्रीस की सेवामें सर्वथा समर्पित थी, जिसने ओटोमन लोगोंकी धुरसे परतंत्र राज्यके बन्धनको नष्ट किया।

अशक ! तू अपने देशकी तारीफ कर, उसका नेता हो, उसको उत्साह और मदद दे।

अपने देश की सेवा करनेका बड़ा भारी व्रत कवियोंके हृदयमें अवश्य होना चाहिये।

॥ श्री ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

मगलद्वादशी ।

(आर्या)

ॐकाराकृति जग जो, इच्छामात्र स्वय बना सारा ।
नमन करू मै उसको, श्रम हरने जोड हाथ सदा ॥

मोह मिटाने दी है, भारत हमको प्रधान पुण्यधरा ।
भवतारक ईश्वरने, नमन उसे बारबार सदा ॥

गति है जहा हमारी, उस मिट्टीको सदा नमस्कार ।
वन, गिरि, सरिता, मारुत, जलान्न, सबको प्रणाम सदा ॥

तेज प्रभाव जिनका, क्या था जगमें विशाल विख्यात ? ।
वाक्पति थे वे कैसे ? पूर्वज—उनको प्रणाम सदा ॥

सुध बुध जिसने हमको, दी—वह भाषा नमू सुधासार।
दे ऐक्यभाव करती, सुधार सबका स्वदेशभला ॥

वाणी प्रधान जगमें, हृद्भावार्थप्रकाशका मधुरा ।
यहि है मगलदात्री, हमपर होओ प्रसन्न सदा ॥

विनयषोडशपदी।

(वसन्ततिलका)

है विश्वकीर्त्तिजननी, जननीतिसारा,
धारा सुधारसकरा, कवितासुधारा।
भारा वही कटुतरा यदि भावहीना,
दीना न हर्ष करती, कभि हो सुलीना॥

है काव्य सुन्दर जहा रमणीयताकी,
सीमा कहीं न जगमें निज एकताकी।
है काव्य नव्य यदि वीररसप्रधान,
देशानुराग करता सुखसन्निधान॥

है धन्य देश जिसमें कवि काव्यकारी,
होते स्वदेश-हित चिन्तक पुण्यकारी।
है काव्य जीव सबका श्रमदु:खहारी,
गाते जिसे सब कहीं कविताविहारी॥

हे रम्य भव्य कविते ! ललितानुरागे !
कल्याण शीघ्र कर भारतका अभागे।
हो तू यहा प्रकट, भाव दिखा नवीन,
हिन्दीसुधार कर तू झट हो प्रवीन॥

॥ श्री ॥

प्रवास-कुसुमावली।

द्वितीय गुच्छ।

श्लोक।

मालव वर्णन।

उपजाति

इन्दोर है मालवे[1] राजधानी,
वही हमारी वसती पुरानी।
किया यहा आकर फेर वास,
परन्तु था शेषे[2] अभी प्रवास॥

शार्दूलविक्रीडित

कैसा मालव था प्रसिद्ध जगमे पुण्यप्रतापी महा?
कैसे वीर नृप प्रजाप्रिय[3] हुए देशोपकारी यहा?।

१ मालवेकी राजगद्दी, इसकी सीमा ऐसी है-उत्तरमे मेवाड और राजपुताना, दक्षिणमे विन्ध्याद्रि और खानदेश, पूर्वमें मध्यप्रदेश और पश्चिममें गुजरात। यह भूमि विन्ध्यपर्वतके शिरोभागवर्त्तिनी है। पर्वतके ऊपरकी जमीनको "माल" कहते हैं, इसी लिये इसका "मालव" नाम हुआ है। २ बाकी। ३ प्रजाके प्यार।

श्रीमद्विक्रममे सार्वभौम नृपकी सत्कीर्ति कैसी अहा !
राज भोजके समान कौन नृप था काव्यानुरागी कहा ?॥ २

वसंततिलका

कैसी पुरी रुचिर उज्जयिनी यहा थी ?
सामन्त थे नृप जहा बहु अश्व हाथी ।
क्या थी विशाल जगमे, उसके समान–
कोई न थी अतुल वैभवसे शोभमान ! ॥ ३

सिप्रा जहा विमल गंधवती-प्रवाह–
संयुक्त थी उपवनाश्रित गन्धवाह ।
देता सुगन्ध, जन थे सब खूब राजी,
प्रख्यात थी गगनचुम्बित सौध-राजी ॥ ४

१ श्रीमान् विक्रम राजाको हुए लगभग दो हजार वर्ष हो चुके हैं। २ धारा पुरीका प्रख्यात एक राजा–जिसे होने लगभग नौसो वर्ष हुए हैं । ३ कवितामें प्रीति रखनेवाला, कविताप्रेमी । ४ सार्वभौमको कर देनेवाला मांडलिक राजा । ५ अनुपम वैभवसे शोभनेवाली । ६ इस नामकी नदीकी धारा । ७ बगीचोंमें घूमा हुआ । ८ वायु, हवा । ९ आकाशसे मिली हुई, सबसे ऊची । १० राजमहलोंकी कतार–पंक्ति । एक दिन यह नगरी भारतवर्षकी अद्वितीय राजधानी थी–इसी लिये इसको मोक्षपुरी मानी गई है । यद्यपि वहां इस वक्त कोई प्राचीन चिन्ह बाकी नहीं है तोभी श्रीमहाकालके पवित्र दर्शनोंसे उसका स्मारक बना हुआ है ।

उपजाति

निराजते थे स्वयमेव ईशी,
धरे हुए पूरन चन्द शसि ।
वहा सदा दे सनको उजाला,
अन्वर्थ की थी नगरी विशाला ॥ ५

मन्दाक्रान्ता

कैसा राजा विनयनत था, पूर्ण विद्या-निधान,
मानी, न्यायी, परम सुकृती, विक्रमार्क प्रधान ? ।
लक्ष्मी, विद्या, सरस कविता थीं जहा एक-भाव,
देशोद्धारी सकल जगमें पूर्ण था यत्प्रभाव ॥ ६

१ महाकाल शिव—रघुवश काव्यमें कालिदासजीने लिखा है कि, "असौ महाकाल-निकेतनस्य वसन्नदूरे किल चन्द्रमौले ॥ तामिस्रपक्षेऽपि सह प्रियाभिर्ज्योत्स्नावतो निर्विशति प्रदोषान् ॥" अर्थात् यह राजा चद शीस पर है ऐसे महाकाल शिवजीके मन्दिरके समिध रहता है, इस लिये कृष्णपक्षमें भी प्रियाओंके साथ चादनेमें प्रदोषकाल-रात्रिका प्रथम-भाग-व्यतीत करता है। इसीका यहा अनुलक्ष्य किया गया है। २ यथार्थ, जैसा "विशाला" नाम है वैसी विशाल अर्थात् बडी। ३ उज्जयिनी—यह पुरी बहुत बडी थी इस लिये इसका नाम "विशाला" भी था। ४ मुख्य। ५ देशका उद्धार करनेवाला। ६ जिसका प्रभाव-तेज। अत्यन्त खेदकी बात है कि ऐसे पुण्यप्रतापी राजाका इस वक्त कुछभी इतिहास उपलब्ध नहीं है।

शार्दूलविक्रीडित

वैसा भोज हुआ प्रसिद्ध जिसकी धारो[1] पुरी थी यहीं,
देता था सुनके नवीन कविता लाखों रुपय्या वहीं।
विद्यो-वैभव नीतिपूर्ण[2] जिसने सर्वत्र की थी मही,
कोई भूप हुआ न फेर जगमें प्रख्यात ऐसा कहीं ॥ ७

वसन्ततिलका

श्री कालिदास कवि[3] रत्न यहीं हुआ है,
वाणी-सुधारस[4] यहीं जिसका वहा है।
ये सभ्य, थी नृप सभा, नवें[5] रत्न भारी,
ये चारुदत्त[6] सम लोक परोपकारी ॥ ८

१ इस वक्त जिसको "धार" कहते हैं वह । २ विद्या, ऐश्वर्य और न्यायसे पूरी । ३ कवियोंमें रत्नश्रेष्ठ । ४ वाणीका अमृतरूपी प्रवाह=कविता अर्थात् रघुवंश, शाकुन्तल, मेघदूत आदि काव्य यहीं बने थे । ५ "धन्वन्तरि क्षपणकोऽमरसिंहशङ्कुर्वेतालभट्टघटकर्परकालिदासाः ॥ ख्यातो वराहमिहिरो नृपते सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य ॥" धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शङ्कु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि—ये नवरत्न महाराज विक्रमकी सभामें विद्यमान थे । ६ यह एक उज्जयिनीमें बड़ा धनिक था, इसने परोपकारमें अपना सब धन लुटा दिया था । शूद्रक कविने इस पर "मृच्छकटिक" नामक नाटक लिखा है । देखनेही योग्य है ।

मन्दाक्रान्ता

हा हा ! होती भरत-वसुधा नामशेषा तथापि,
ऐसे होते नृप न कवि वा, पूर्ण पुण्य-प्रतापी ।
विद्या, धर्म स्मरण न रहते बीज ना आज पाता,
हिन्दूका हा ! कहिँ न जगमें नामभी याद आता !॥ ९

शार्दूलविक्रीडित

भूलोगे न कभी सिकन्दर-कथा, थी नीज दुर्दैवकी,
कैसा था महमूद-आक्रमण हा ! वार्ता पृथीगंजकी ? ।
गोरी आर गुलाम वा मुगल ये कैसे प्रमादी यहा ?
कैसी की कतल कराल ? सुनके रोमाच होता महा ? ॥ १०

१ ईसाई सनके ३२७ वर्ष पहिले जिसने यूनानसे आकर हिन्दपर आक्रमण किया था। एक यूनानी एलची चन्द्रगुप्तके दरबारमभी था। २ इसने सन् १००१ से १०२४ तक हिन्दपर हमले किये जिसमें देशको बहुतही तबा करके करोडाका माल अपने देश ले गया। ३ थानेसरमें महम्मद गोरीके साथ बडा भारी युद्ध हुआ जिसम यह सन् ११९३ में काम आये, वे पृथ्वीराज चौहान। ४ सन् ११९९ तक बगालेतक इस खानदानकी सत्ता हो चुकी थी और इसका राज्य १२०६ तक रहा। ५ इस खानदानकी सत्ता १२०६ से १२८८ तक रही। ६ इनकी सत्ता १५२६ से १८५७ तक रही।

पृथ्वी

कृतान्त[1] सम थे कडे, अनय[2] था जिन्होंका हिया,
स्वधर्म सबका हरा, कर लगा बुरा जेजियाँ[3] ।
हरी नृपतिकन्यका[4], छल विचित्र भारी किया,
निपात[5] कर भारत प्रबल हो सभी ले लिया ॥ ११

शार्दूलविक्रीडित

होते ना गुरु रामदास[6] अथवा राजा सिवाजी[7] यहा,
सिन्दे[8], हुल्कर[9], पेशवादिक[10] कभी होते बुरे हाल हा ! ।

१ यम, काल । २ अन्यायी । ३ हिंदुओंको मुसल्मान बनना अवश्य होनेके लिये औरंगजेबने इस नामका एक बडा भारी कर लगाया था । ४ माडलिक राजाओंकी बेटीके साथ शादी करते थे । ५ आखरी गिरना । ६ यह सिवाजी महाराजके गुरु थे। सिवाजीने इनको अपना सब राज्य दान कर दिया था, तथापि इन्होंने उसको वापिस करके सिर्फ अपना चिन्ह भगवा झडा-पताका कायम रक्खा । ७ यह हिंदुपदपाद शाहीके संस्थापक प्रभावशाली धर्मसरक्षक सताराके छत्रपति राजा हुए । इनका जन्म सन् १६२७ में और मृत्यु सन् १६८० में हुई । ८ इनके आदि पुरुष रानोजी राव सिन्दिया हुए। सन् १७४० से अब तक इनकी गादी ग्वालियरमें विद्यमान है । ९ आदि पुरुष मल्हारजी होलकर "होल मुरुम" गावके रहनेवाले थे, इनकी गादी सन् १७३२ से माल्वेमें आजतक विद्यमान है । १० इस प्रतापी महाराष्ट्र ब्राह्मण खानदानका आदि पुरुष "बालाजी विश्वनाथ" था, जिसकी मृत्यु १७२० में हुई । पेशवाई सन १८१८ तक पूनामें रही ।

जाता धर्म, न भारतीय रहता! कैसी दशा देशकी—
क्या होती फिर? कौन जान सकता लीला भला ईशकी! ॥ १२

होते ना उस वक्त होलकर वे मल्हाररजी, मालवा—
आता हाथ न, दूर होति तुरकी-सत्ता कभी ना लवो।
सिन्दे मोहदजी न शूर बनते "पाटील बाबा" वही—
होते रूयात न, छीनते न यदि वा इस्लामियोंसे मही ॥ १३

इन्दोर राज्य-वर्णन।

शिखरिणी

अहल्या बाई थी शुभ कुलवधू होलकरकी,
चलाई थी सत्ता पति निज सदा राज्य-भरकी।

१ हिन्दू। २ इनका जन्म सन् १६९३ में और मृत्यु सन १७६६ में हुई। ३ मुसल्मानाकी अमलदारी। ४ थोडीसी भी। ५ इनका जन्म सन् १७४३ में और मृत्यु १७९४ में हुई। यह बडे पराक्रमी थे। पानीपतकी लडाईमें लगडे हो गये थे ६ पेशवाकी तरफसे इनको यह पदवी मिली थी। ७ यह मल्हारराव होल्करकी स्नुषा अर्थात् पुत्रवधू और खडेरावकी रानी थी। इनका पति सन् १७५५ में युद्धमें स्वर्ग वासी हुआ तब इनके श्वशुर मल्हारराव विद्यमान थे। उनके पीछे इन्होंने सन १७६७ से १७९५ तक बहुतही धर्मनीतिसे राज्य चलाया। सन १७७० में इन्होंने एक छोटेसे गावको इन्दोर शहर बनाया था। ८ सब होलकर राज्यकी।

क्रिया भागी ज्ञान, व्रत नियम पूजा विविध की,
बनी साक्षाद्देवी, प्रभु बिन नहीं अन्य सुर की ॥ १४

शार्दूलविक्रीडित

कैसे वे यशवन्तराव पटु थे ? संग्राममें हारकी—
जानी बात कभी न, कायम करी गादी "सुभेदार"की ।
सिन्दे मार हटाय दूर करके, जो पेशवासे लडे,
होते थे सुनतेहि नाम जिनका रोंये सभीके खडे ॥ १५

भुजंगप्रयात

जयाजी तुकोजी महाराज, भूप—
हुए मालवेमें अभी जो अनूप ।

१ इनका जन्म सन् १७९७ में और मृत्यु सन् १८११ में हुई । २ पेशवाकी ओरसे मल्हारराव मालवाके सूबा हुए थे तबसे इनको सब "सुभेदार" कहते थे । ३ दौलतराव सिन्दियाने इनका राज्य छीन लिया था । फिर इन्होंने खूब सेना इकठ्ठी करके सन् १८०१ में अपना राज्य वापिस लिया । ४ इसके अनन्तर थोडेही समयमें सन् १८०२ में पेशवाके साथ झगडा हुआ उसमें उनके साथ जोरसे लडकर उनको परास्त किया । ५ यशवन्तरावका । ६ इनका जन्म सन् १८३३ में और मृत्यु १८८६ में हुई । यह दत्तक आये थे इनका पूर्व नाम "भागीरथराव" था । ७ इनका जन्म और मृत्यु महाराना जयाजी रावके साथ साथ हुई । थोडेही दिनका अन्तर रहा । ८ निरुपम, तुल्नाहीन ।

स्वय राज्य रक्खा दिखा आत्मशक्ति,
प्रजाकी बढाई सदा राजभक्ति ॥ १६

मालिनी

अमल यश जिन्होंका योग्य है कौन गाने ?
अतिशय जिनकी थी योग्यता कौन जाने ? ।
नियमित सरला थी कार्यवाही, विचार—
उचित कर चलाया राज्यका कारभार ॥ १७

स्रग्धरा

क्या ये दूजे सिवाजी पुनरपि जनमे ? नामभी है सिवाजी,
वैसाही था जिन्होंका अनुकरण सदा, रैव था हा न गर्जी ! ।
होता वैसा अंधेरा इस समय कभी, कार्यवाही न्सिाते—
वैसी अच्छी ! सिवाजी गत नृपसम वा, ना कहीं हार खाते ॥ १८

वसन्ततिलका

हा ! कालकी कुटिलता अति है विचित्र !
होना पडा त्रितय आश्रम ले पवित्र ।

१ निजकी शक्ति, २ भूतपूर्व सिवाजी महाराज । ३ समान कृति । ४ भूतपूर्व सिवाजी जैसा । ५ भूतपूर्व । ६ तीसरा । ७ वानप्रस्थाश्रम—"पुत्रमुत्पाद्य वनवास कृत्वा अकृष्ट पच्यफलादि भक्षयित्वा ईश्वराधान करोति य स वानप्रस्थ" पुत्रको उत्पन्नकर वनमें आके फलादिकोंका भक्षण कर जो ईश्वरका आराधन करता है उसको "वानप्रस्थ" कहते हैं ।

हे योग्य, वर्महरे[1] वा युवराज[2] मान,
छोडा नृपासन, वशी[3] रघुके[4] समान ॥ १९

उपजाति

वे नर्मदाके अब तीर आ बसे,
निवृत्त[5] होके सब कामकाजसे ।
देके उन्हें ईश्वर पूर्ण शान्तता
करो मनीषा सकलार्थ[6]-संगता ॥ २०

वसन्ततिलका

दर्बार हो सिलैत[7] दी, युवराज भूप–
माने गये, नियत कौन्सिल[8] हो अनूप ।
होना प्रबन्ध[9], जन लों नृप योग्य होवे,
ले सम्मति ब्रिटिशकी[10] प्रभुता[11] चलाने ॥ २१

१ कवच कुडल धारण करनेके लिये योग्य, तरुण । २ राजकुमार, राजपुत्र । ३ जितेन्द्रिय, जिसने इन्द्रियाको जीता है वह । ४ यह भगवान् रामचन्द्रके परदादा थे और दिलीपके पुत्र थे । कालिदासने रघुवशमें लिखा है कि, "न हि सति कुलधुर्ये सूर्यवश्या गृहाय' कुलको चलानेवाला पुत्र होने पर सूर्यवशी कभी घरमें रहते नहीं । ५ ता० ३१ जनवरी सन् १९०३ को राज्यका इस्तिफा देके अलग हुए । ६ सब अर्थ धन मानादिक जिसमें मिले हुए हैं ऐसी । ७ सार्वभौम अंग्रेज सरकारकी तरफसे ता० ३१ जनवरी १९०३ को राज्यपद युवराजको दिया गया उसका खरीता । ८ विचारकोंकी सभा । ९ कारोबार । १० अंग्रेज सरकारकी । ११ राज्यशासन ।

शार्दूलविक्रीडित

देने शिक्षण योग्य, बाल नृपको, दे हाथ अंग्रेजके,
विद्या नीति पढाय शिक्षित किया कालेजमें भेजके ।
राजा बालक है परन्तु उनकी प्रज्ञा बडी तेज है,
क्या होता शिशु सिंहका हरिणसा? कैसाभि निस्तेज है ? ॥ २२

भुजगप्रयात

सवाई तुकोजी महाराज नाम,
यशस्वी जिन्होका, करू मै प्रणाम ।
महाराज भावी यहाके, प्रभावी,
प्रजाभाव-भावी, बनो सत्वभावी ॥ २३

वसन्ततिलका

देवो महेश इनको अमित प्रताप,
कम्पायमान रिपु हो सहके न ताप ।
प्रख्यात हो विमल कीर्ति महाप्रभाव,
पालो प्रजा, बन चिरायु पवित्र-भाव ॥ २४

१ छोटे महाराजको । २ "केपटन फोर्ब्स" और "पासीहाइड" वगैरह अंग्रेज । ३ डेली और मेओ कालेजमें । ४ बुद्धि । ५ बालक । ६ तेजहीन, निर्बल । ७ होनहार । ८ प्रभावशाली, तेजस्वी । ९ प्रजाके भावमें जिनका भाव मिला हुआ ऐसे । १० अच्छे स्वभावके । ११ शुद्ध है भाव जिनका ।

शार्दूलविक्रीडित

वैसे नानकचन्दजी सचिव हैं, न्यायी गुणी सन्मति,
रक्खा राज्य विचारयुक्त चलके, सेवा बजा कीमती ।
पाया मान इनाम इन नृपसे सम्राट् महाराजसे–
सोनेका पदक, प्रधान पदवी "सी आय ई" कार्जसे ॥ २५

भुजंगप्रयात

तुकोजी सिवाजी रहें तुष्ट भारी–
इन्होंके गुणों पै, किये कारभारी ।
रेजीडेन्ट, एजेन्टें, अंग्रेज सारे,
गुणी सुज्ञको कौन कैसे बिसारे ? ॥ २६

१ प्रधान मन्त्री । २ श्रीमान् तुकोजी महाराजा और श्रीमान् सिवाजी महाराजासे । ३ अंग्रेज सरकारकी तरफसे इनको "कैसरे हिंन्द गोल्ड मेडल' ता० २६ मई सन् १९०० को मिला है और "सी आय ई" का सम्माननीय पद ता० २१ नवंबर सन् १९०१ को मिला है । इनको यहां पुश्त दर पुश्तके लिये जागीर भी दी गई है, इनाम मिला है और इनके परम माननीय स्वर्गवासी पिताके पद "मशीरुद्दौला' और "राय बहादुर" के खिताब इनके लिये कायम रक्खे गये हैं । ४ कारवाईसे । ५ मुन्शी नानकचन्दजीके । ६ मि० जेनिंग, कर्नल बार, यंगहस्बंड आदि । ७ मध्य भारतके गवर्नर जनरलके एजन्ट । ८ अन्यान्य अंग्रेज ।

शिखरिणी

रही सत्ता भारी पर नहि निसार्गी उपकृति[1],
सदा मीठी बोली श्रवणसुख[2] हो ली, न विकृति[3] ।
कहींभी ना मोहे, सचिवपद सोहे, शुभ रति–
शिवार्चामें[4] पाइ, दृढतर मिलाई उपरति[5] ॥ २७

उपजाति

रचा गया कौन्सिल मेम्बरोंसे,
होने लगी बैठक नम्बरोंसे ।
होता सदा न्याय मताधिकोंसे[6]
इन्साफ पाके जन कौन कोसे ? ॥ २८

भुजगप्रयात

भुजकेतु[7] जैसे रजीडेन्ट भारी,
हुए प्रेसिडेन्ट[8] प्रजा सौख्यकारी ।
सदा कौन्सिल-स्थान शोभा बढाई,
प्रजाको खरा न्याय दे कीर्त्ति पाई ॥ २९

१ उपकार । २ कानको प्यारी लगनेवाला । ३ विकार । ४ शिवके पूजनमें । ५ दृश्य पदार्थ नाशवान् हैं ऐसी भावना । ६ अधिक मतसे । ७ मि० बोनाकेट । ८ सभापति, मीरमजलिस ।

मह्रू-वर्णन ।

वसन्ततिलका

है छावनी निकटही महुकी प्रधान,
सेनो[1] सितासित[2] जहा विविध[3]-प्रमान ।
है वस्ति चालिस हजार शुमार सारी,
हैं मारवाडि जिसमें धनिको[4] धिकारी ॥ ३०

उपजाति

परन्तु विद्या[5]-विमुख-स्वभाव,
है मारवाडी जन निष्प्र[6]भाव ।
न जानते रीति कुरीति कैसी ?
स्त्रिया बनी हैं अति मूढ वैसी ॥ ३१

मालिनी

कब उचित बनेंगे सीख विद्याविचार ?
कब अधिक बनेंगे श्रीयुत[7] श्री[8]प्रचार ? ।

१ फौज । २ गोरी और काली । ३ न्यारे न्यारे प्रकारकी गिनतीकी । ४ धनवान् और व्यापारी । ५ विद्या सीखनेमें मुँह मोडनेवाले । ६ तेजहीन । ७ धनवान् । ८ धनका प्रचार करनेवाले ।

किस समय तजेंगी वे स्त्रिया ग्रांम्य गीत[1]
कब वह सुधरेगी कौन जाने कुरीत! ॥ ३२

वसंततिलका

काटे यहा दिन घने करके विचार,
की ग्रन्थ-काव्य रचना विविधप्रकार[2] ।
इच्छा हुई प्रबल, भारत-राजधानी[3]–
जा देखने फिर, महा नररत्नखानी[4] ॥ ३३

मालिनी

कठिन दृढ विचित्र प्रेमका पाश[5] भारी,
पर शिथिल किया हा! दैवने हो कुधारी ।
प्रणय[6] विविध छोडा, रेलमें हो सवार,
झट गमन किया ले साथ प्रेमोपहार[7] ॥ ३४

१ गालियां, अभद्र गीत । २ नाना प्रकारकी । ३ कलकत्ता । ४ नररूपी रत्नोंकी खान अर्थात् जहां श्रेष्ठ पुरुषोंका निवास है उसे । ५ बंधन–एक कविने कहा हे 'बन्धनानि किल सन्ति बहूनि प्रेमबन्धनमवेहि विचित्राम् ॥ दारुभेदनिपुणोऽपि षडंघ्रिर्निष्क्रियो भवति पङ्कजकोशे ॥" अर्थात् बन्धन बहुत हैं पर उन सबमें प्रेमबन्धन बडा विचित्र है । लकडीको छेद करनेवाला भ्रमरभी कमलकोशमें बद्ध हो जाने पर चुप हो जाता है। ६ प्रीति । ७ प्रेमका उपायन ।

विन्ध्य वर्णन ।

उपजाति

आडा पडा जो सबसे बडा है,
विन्ध्याद्रि रोके पथको खडा है ।
दरी गुहा हैं जिसमें विशाल,
हैं श्वापदोंका गृह जो कराल ॥ ३५

वसन्ततिलका

विन्ध्याटवी यदि न दुर्गम होति आज,
टन्ट्यो न शूर बनता छिप डाँकुराज ।
आता न हाथ किसके वह दे दिखाई,
क्या थी मजाल ! यदि होति न दीर्घ खाइ ॥ ३६

१ विंध्य नामा पर्वत, सातपूडा । २ हिंसक पशु । ३ सातपूडे पर्वतका अरण्य । ४ यह एक बडा भारी डाकू था । इसी पर्वतमें छिपकर अपना अद्भुत पराक्रम दिखाया करता था । बडे बडे पुलिसके अफसर इसके पकडनेमें असमर्थ होके चकरा गये थे । आश्चर्य है कि डाकू होने परभी धर्म पर आरूढ था । इसका जीवनचरित प्रसिद्ध हो चुका है । ५ यह पर्वत पूर्व कालमें बहुतही ऊंचा था तथापि इस वक्तभी इतना फैला हुआ है कि कोसों इसका विस्तार है और इसमें लंबी चौडी और गहरी अनेक खाइ गुहा आदि हैं ।

उपजाति

आश्चर्य क्या ? जो रविको छिपाता [1]
वहा किसीका पथ कौन पाता।
बडे बडे वीर जहा समाये,
चला पता ना कहि, हाथ आये ॥ ३७

वसन्ततिलका

ऐसा भयान गिरि, किन्तु वहा दिखाय—
स्वाभाविक प्रिय बडा वनराजि-भाव[2]।
है ठौर ठौर तरुपुञ्ज[3], निकुञ्ज[4] भागे,
है पक्षि कूजित[5] जहा श्रुति सौख्यकारी[6] ॥ ३८

१ पुरा कालमें यह पर्वत बडा ऊचा और हठीला था। अपने शृंग ऊपर बढाकर सूर्यके पथको रोक देता था, इस लिये सबको बडा क्लेश होने लगा। उस वक्त सब लोगोंने मिलकर श्रीसूर्यनारायणकी प्रार्थना की, उस परसे श्रीसूर्यनारायणने अगस्ति ऋषिको कहा कि विन्ध्याद्रिको आप उपदेश करके ऊपर बढनेसे रोक और लोगोंका क्लेश दूर करें। उसपरसे दक्षिण दिशामें जाते वक्त अगस्ति ऋषिने उसको ऊपर बढनेसे रोका था—ऐसी कथा वामन पुराणमें है। २ वनकी कतारोंका सुन्दरता। ३ वृक्षसमूह। ४ झाड बेलसे बनी हुई गुफा। ५ पक्षियोंका शब्द। ६ कानोंको आनन्द देनेवाला, मीठा। इस पर्वतमें ऐसे सुन्दर स्थान और पशुपक्षी अनेक जगह है।

मन्दाक्रान्ता

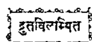
गाडी जैसी पवन चपला जा घुसी "बोगदे[2]" में,
आया यान त्वरित कैलाश हंसपथा रन्ध्रमें।
आने जाने परशुरामने मारके बाण सिद्ध,
क्रौंच था जो विवर गिरिमें क्रौंचरन्ध्र प्रसिद्ध॥ ३९

शार्दूलविक्रीडित

क्या वैज्ञानिक शक्ति एक दिन थी सर्वोच्च भारी, तथा
जो "शापादपि" वा "शरादपि" यहा विज्ञान विख्यात था।

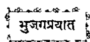
१ हवाके समान वेग है जिसका ऐसी। २ बडे बडे पर्वतके शिखर खोदके आगगाडी जानेके लिये जो रास्ता बनाया गया है वह "बुगदा", विवर। ३ था कालिदास कविका वर्णन किया हुआ। ४ हिमालयके उत्तरकी तरफ मानस सरोवरमें हंसोंके जानेके लिये पर्वतके शिखरमें जो मार्ग किया हुआ है–वह। ५ परशुरामने। ६ क्रौंच पर्वतके शिखरमें–यहां परशुरामने बाण मारकर आरपार रस्ता बनाया था। ७ क्रौंच पर्वतका रन्ध्र विवर, बुगदा " हंसद्वार भृगुपतियशोवर्त्म यत्क्रौंचरन्ध्रम् " ऐसा कालिदासने लिखा है। यह शिखर हिमालयके निकटवर्ती है। ८ विज्ञान–शिल्प, कारीगरी, पदार्थविज्ञान–जिसको अंग्रेजीमें "Seicnce" सायंस कहते हैं–उसके संबधकी। ९ सबसे ऊंची, श्रेष्ठ। १० शापसे। ११ बाणसे–अर्थात् "चत्वारश्चाग्रतो वेदा पृष्ठत सशरं धनु। इदं ब्राह्ममिदं क्षात्रं शापादपि शरादपि" अर्थात् आगे चारों वेद, पीछे बाण लगा हुआ धनुष्य ऐसा यह ब्राह्मतेज और क्षात्रतेज शापसे और बाणसे समर्थ है।

कैसी उन्नत थी अपूर्व उनकी अध्यात्म-विद्या महा?
गाड़ी, तार, विमान, यंत्र सब थे स्वाधीन जिस्से यहां॥ ४०



नमन है उस चालके कालको,
स्मरण-मात्र किया सब हालको।
अतुल भारत था जगमें यहीं,
अहह! दीन हुआ, गति ना रही!॥ ४१

नर्मदा-सेतु-वर्णन।



नदी नर्मदा शुद्धतोया पवित्रा,
इसी विंध्यमेंसे बही है विचित्रा।
उसी पे बना दो तलों भारि सेतु!
नमस्कार मेरा, करो पूर्ण हेतु॥ ४२

१ वह विद्या कि जिसमें आत्मतत्त्वका विचार है, परब्रह्म ज्ञान, वेदान्त विद्या। २ चलानेवाला। ३ यादगार, स्मारक। ४ पवित्र, स्वच्छ है पानी जिसका वह। ५ नीचेसे बैलगाड़ी और ऊपरसे रेलगाड़ी जानेका रस्ता किया हुआ है ऐसा दो मंजिलवाला। ६ पुल-बड़वाय और मोरटक्काके बीच बना हुआ है।

मन्दाक्रान्ता

आने गाडी पुलपर जब प्रान्त[1]का भाग भारी,
दीखे न्यारा उभय तटका दृश्य चित्तापहारी[2]।
मानो होके शिथिल[3]-शिथिला, नर्मदा धार धीच
छाया द्वारा प्रतिकृति[4] बना, जा रही चित्र[5] खींच ॥ ४३

मालिनी

जिस समय तुकोजी भूप थे विद्यमान,
उस समय खुला है सेतु लम्बायमान[6]।
सुखद रुचिर कैसा काल था भासमान[7]?
अब कठिन वही है कालका कालमान[8]!॥ ४४

ॐकारनाथ-मान्धाता वर्णन।

उपजाति

ॐकारनाथ प्रभुका पवित्र,
समीप है मन्दिर चारु[9]-चित्र।

१ किनारोंकी हद मध्यभाग। २ चित्तको हरण करनेवाला, सुन्दर। ३ मन्द मन्द, धीमा धीमा। ४ अक्स, केमेराके काचके ऊपर जो प्रतिबिम्ब पडता है वह 'फोकस'। ५ तसवीर, "फोटो"। ६ लंबा। ७ अनुभवमें आनेवाला, दीखनेवाला, चमकीला। ८ समयका परिमाण। ९ सुन्दर है चित्र जिसका वह।

है नर्मदाके तट पै विशाल,
अत्युच्च, झांकी जिसकी कमाल ॥ ४५

बने हुए हैं चहुँ ओर घाट,
लगा हुआ है सब ठौर ठाट ।
है यात्रियोंकी ठठ नित्य भारी,
जहां बिराजे शिव चन्द्रधारी ॥ ४६

शालिनी

मान्धातासे नर्मदा-तीर एक,
सोहै भारी, दृश्य अच्छे अनेक ।
कैसी चौड़ी सीढ़ियां पार जाने–
बांधी है ? वा तीर भारी सजाने ? ॥ ४७

शार्दूलविक्रीडित

ओंकारेश्वरका निवास यहिं था पूरा युग कालमें,
जा बैठे पर तीर पै, यवनके उच्छेदके हालमें ।

१ जिसने अपने सिर पर चन्द्र धारण किया है वह । २ श्रीओंकारेश्वर द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमेंसे है । महमूद गजनवीने और सतरहवीं तथा अठारहवीं शताब्दीमें यवनोंने इसके असली मंदिरको छिन्नविछिन्न कर दिया था । फिर पेशवाने पर तीर अर्थात् उत्तरके किनारे पर नया मंदिर बनाया । ३ उत्तरके तीर पर । ४ तोड़ताड़, धूमधाम ।

हाहा ! काल ! विचित्र शक्ति महिमा तेरी, तुही काल[1] है,
हा कैसा ! उस काल[2]-काल निभुका तूही महाकाल[3] है ? ॥ ४८

मालिनी

विमल जल भरा है नर्मदाके किनारे,
उछल उछल भारी मच्छिया जोर मारे।
सकल जन नहाके, भक्तिसे गा चरित्र,
शिव-चरण चढाते नीर, होने पवित्र ॥ ४९

वसन्ततिलका

श्रीसिद्धनाथे-शिव-मन्दिर[4] जो निर्शीर्ण[5],
टूटा उजाड गिरि ऊपर है विकीर्ण[6] ।
प्रासाद[7] भिल्ल-नृपका[8] गिरिमध्यवर्ती,
सोहे नितान्त पर्णवीयि[9] तटान्तवर्ती[10][11] ॥ ५०

मालिनी

अधिकतर सताते यात्रियोंको पुजारी,
द्विज पर नहिं होते तुष्ट ले दान भारी ।

१ संहार कर्ता । २ कालकाभी संहार करनेवाला । ३ बडा काल । ४ यह पुरातन मन्दिर उत्तरीय पहाडी पर है । ५ पुराना । ६ बिखरा हुआ । ७ राजाका महल । ८ भील जातिके राजाका । ९ पहाडके । १० बाजारका मार्ग । ११ तटके समीप ।

कठिनतर इसीसे तीर्थयात्रा बनी है,
हर हर ! जन ऐसे कौन माता जनी है ? ॥ ९१

रेल-वर्णन ।

मालिनी

नमन कर, शिवाज्ञा मान, मानो प्रवास–
ग्रहण कर चला हूं, देखने सन्निवास[1] ।
झटपट पहुंची जा खड़वे रेल-गाडी,
उतरकर चढ़ा मैं "मेल" में हो अगाडी ॥ ९२

शिखरिणी

चली भारी "मेल" प्रनलचपला[2] शब्द करती,
सुदूरा[3] भूं[4] होवे निकट, निकटा दूर धरती ।
पिछाडी दौडे वे तरु[5], चपल हो वाड[6] पथकी,
हुई याद स्पर्धी[7] उस समय दुष्यन्त रथकी[8] ॥ ९३

१ अच्छा निवास उत्तम टिकाना । २ जोरसे तेज चलनेवाला । ३ बहुत दूरकी । ४ पृथ्वी, जमीन । ५ वृक्ष । ६ रेलवेके दोनों तरफकी तार लगी हुई वाड अर्थात् "fencing" । ७ बराबरी करनेवाला । ८ दुष्यन्त राजाका रथ– कालिदासने अपने शाकुन्तल नाटकमें इसका यों वर्णन किया है–" यदा लोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद्विपुलतां यदर्द्धे विच्छिन्नं भवति कृतसन्धानमिव तत् ॥ प्रकृत्या यद्वक्रं तदपि समरेखं नयनयोर्न मे दूरे किंचित्क्षणमपि च न पार्श्वे रथजवात् ॥ "

शार्दूलविक्रीडित

हुई आय इटारसी निकटही, आया जबलपुर वा,
सायंकाल हुआ चिराग जलके गाडी चली भोरवो।
हो माणीकपुर प्रयाग ठहरी, मध्यान्ह था रातका,
भारी भीड वहा, प्रबन्ध कुछ ना देखा किसी बातका ॥ ९४

मन्दाक्रान्ता

हा हा! कैसे पथिक जनको रेलवे-कर्मचारी–
देते त्रास श्रम! वह कथा ना कही जाय सारी।
तौभी आया अनुभव मुझे सो कहूं अल्प आज,
तीजों दर्जा अति कठिन है रेलका जेलराज!! ॥ ९५

शिखरिणी

फटे टूटे माथा, कर पद दबे रेल चलके,
गिरे कूदे वैसे, अगणित मरे हैं कुचलके।
हुए दुखी टट्टी बिन पथिक निष्पत्र रुकके,
रहे वैसे नीचे उतर कितने, "ट्रेनें" हकके! ॥ ९६

१ जिसका शब्द भयंकर है वह। २ मध्यकाल, आधीरात। ३ मुसाफिर, प्रवासी। ४ तीसरा क्लास। ५ जेलोंका राजा अर्थात् जेलोंसेभी भयंकर। ६ पाखाना, पेशाब। ७ गाडीमें ऐसी घटनायें बहुत होती हैं।

मन्दाक्रान्ता

भारी भीड, स्थल न रखने पैर, तौभी हटाके,
लाते यात्री अधिक भरते, कर्मचारी ठगाते।
बोडेमें ला भर बकरिया भेड मानो भरी है!
देके ताला पथिक करते बन्द, कैसा खरी है!!॥ ९७

शार्दूलविक्रीडित

खानेको कुछ भी न, नीर मिलता अच्छा, नहीं स्थान था,
लेने स्टेशन पै विराम किसको, कैसी व्यवस्था नवो?॥
लेनेमें टिकट प्रयास पडता, होता महा त्रास हा!
आने न नहिं "प्लेट फॉर्म" पर वे, इससे न जाता सहा!!॥ ९८

मालनी

अहह! टिकटबाबू त्रास दे बारबार,
टिकट निरख लेते, बोझ तौले उतार!।
इधर उधर दौडे यात्रियोंको सताने,
कुछ न कुछ बटोरे, बात खाली न माने!॥ ९९

१ बकरिया और भेडके रहनेकी जगह। २ जेलखाना। ३ पानी। ४ तजवीज, कारोबार। ५ नई, अच्छी। ६ श्रम, कष्ट। ७ गाडी खडी रहती है वहांका चातरा। ८ लेवे।

धरम, धन, भलाई, रेलवेने हमारी–
सुध बुध सब छीनी, सूत्र की जानमारी ।
कुछ वन नहिं आता, ना चले काम काज,
उस दिन हम सारे हो गये पगुं आज[1] ॥ ६

बहुत कठिनतासे मार्ग बीता हमारा,
पर झट हवडेमें[2] "मेल" ने ला उतारा ।
नियत समय लेने "रामके[3] लाल" आये,
घर पर–कर भारी प्रेम सत्कार–लाये ॥ ६

भूतपूर्व-तीर्थयात्रा-वर्णन ।

मालिनी

प्रथम जब हुई थी तीर्थयात्रा हमारी,
तब यह कलकत्ता राजधानी न सारी ।
फिरकर निरखी थी, ना किसीसे मिला था,
समय नहिं रहा था, चित्तभी ना खिला था ॥ ६

१ गतिहीन, लंग । २ कलकत्तेका आखरी स्टेशन । ३ रामलाल नेमाणी । ४ सं
१९४८ में तीर्थयात्रा की थी । तब जगन्नाथ स्वामीके दर्शनोंके लिये जानेका था इस
लिये कलकत्तेमें ठहरा था । उस वक्त चित्त शान्त न होनेसे सब शहर देखा नहीं औ
न किसीसे मिला भी था ।

शिखरिणी

जगन्नाथ स्वामी दरश कर सन्ताप हरने,
मनीषा थी भारी अनुपम पुरी धाम करने।
न रस्ता दूजा था, नहिं जलधिका शान्त पथ था,
रहा, पीछा लौटा झट, निहैत था दैव अथवा ।॥ ६३

वसन्ततिलका

श्रीतारकेश्वर महा शिवके नितान्त,
वे पुण्य दर्शन हुए उस वक्त शान्त।
है श्रेष्ठ भाग्य जिसके उसको सुयोग,
होता अपूर्व यह पावन-संप्रयोग ॥ ६४

पाने निजेप्सित वहा कितनेहि लोक,
सोते समीप शिवके कर दु ख शोक।
होके प्रसन्न करुणाँघन इष्ट देता,
है भाग्यहीन जन दर्शन जो न लेता ॥ ६५

१ पूर्व दिशाका एक बडा धाम। २ समुद्र। ३ बुरा, दुर्दैव। ४ यह स्थान बगालमें प्रसिद्ध है। ५ पवित्र करनेवाला अच्छा प्रयोग अर्थात् निदर्शन। ६ मनचाहा, इष्ट। ७ दयाका मेघ अर्थात् कृपापूर्ण।

नित्यक्रम-वर्णन ।

मालिनी

अब हम सब भूले "रामके लाल" पास,
रहकर दिन सोते, साथ वा आसपास ।
फिरकर सब देखी राजधानी विशेष,
पर कभि न हुआ है चित्त सन्तापशेष ॥ ६

मधुर मधुर बातें दीं सुनाई अपार,
पर कभि न हुई थीं शेषे, पाया न सार[1] ।
यदि हम फँस जाते देशके शुष्कभार,
कभि न निन्ति होता मारवाडी-स्वभाव ॥ ६

कलकत्ता-वर्णन ।

पूर्व इतिहास ।

शार्दूलविक्रीडित

सोलेसो सन वीच नींव पडि थी, थी अल्प वस्ती यहा,
सम्राट् अकबर था सुशील, पर ये नव्वाब जुल्मी महा ।

१ स्वस्थ । २ बाकी । ३ सूखा भाव । ४ कलकत्तेकी नींव सन् १५९६ में पडी
थी । ५ उस वक्त कुल १२००० आदमियोंकी वस्ती था । ६ मुर्शिदाबादके नव्वाब

पीछे एक सेंट यहा पर हुई अंग्रेजकी स्थापना,
मुख्य स्थान बना यहीं, नृप हुए व्यापार फैला घना ॥ ६८

शिखरिणी

शिराजुँदौला था नरपति बडा सख्त सबसे,
किया अंग्रेजोंका वध, अधिक हो क्रूर यमसे ।
जहा ऐसा योग्य स्थलें न रखने पाव दसके,
वहा लाके रक्खे शत अधिक ! कैसे रह सके ? ॥ ६९

मालिना

सब जन अति छोटी कोठडीमे भरे थे,
स्थल जल बिन सारे रातहीम मरे थे ।
अहह ! बहुत थोडे लोग कोई बचे थे,
निज अहित कराने पाप क्या ये रचे थे ? ॥ ७०

१ सन् १६९६ के शुमारमें । २ बड़ा व्यापार करके हा हिंदुस्थानके राजा हुए हैं । ३ इसने सन् १३५६ में अंग्रेजोंसे नाराज होके उनपर एकदम आक्रमण किया और उनके १४६ अफसर कैद करके एक बीस फुटवाली छोटीसी कोठडीमें रक्खे । जगह और पानीकी तंगीसे बहुधा सब लोग रातहीमें मरे ! उनमेंसे सिर्फ २३ आदमी बचे थे इतना यह निर्दय था । ४ कतल, हिंसा । ५ जगह, स्थान । ६ सौसे ज्यादा अर्थात् १४६ । ७ जिसका पैमाना बीस फुटका था वह । ८ सिर्फ तेइस आदमी । ९ बुराई, खराबी ।

उपजाति

प्रसिद्धि पाया वह "ब्लाक-होल"
बना वहा स्मारक चित्त खोल ।
वृत्तान्त सारा लिख दु खकारी,
खडा किया पत्थर खभ भारी ॥ ७

शिखरिणी

मैराठोंका झडा उस समय सर्वत्र भगवा-
बना बगालेको, फिर कर गडा था भय गया ।
वहा अंग्रेजोंने अचल करने ठीक अपना,
बनाई थी खाई, पर कर गई आज सपना ! ॥ ७

१ जहा ये लोग मरे ह उसका नाम "Black Hole" अर्थात् काला छिद्र-ऐस शोरदशक रक्खा है । २ अब जनरल पोष्ट आफिसके निकट एक पत्थरका खभ खड करके दूसरा स्मारक बनाया गया है । इसी जगह वह कालकोठडी थी । ३ सन् १७४ से १७४९ तक बगालेमें रघूजा भोसलाके दीवान भास्कररावने सेनाधिपत्य कर बगालें बडे जोरका आक्रमण किया था । ४ मराठोंके झडेका रग भगवा है जिसका कारण ६ पेजकी ६ टिप्पनामें दिया गया है । ५ कलकत्तके नजदीक इनका सेनानिवेश हुआ था । ६ रक्षण । ७ सन १७४२ में मराठोंके आक्रमणसे बचनेके लिये अंग्रेजोंने कलक तेके चहु ओर तीन माल लबी खाइ बनाई थी ।

अंग्रेज-पराक्रम ।

शार्दूलविक्रीडित

प्लासीके रणमें हटा यवनको, छौईव वाट्सन्मेंहा,
जीते पूरव देश, हार अपना खोया नहीं जन्म हा ! ।
कल्कत्ता सब ले लिया, न बदला छोडा उसी कालमें,
वे हैं धन्य खरे, स्वबन्धुहितके कर्ता सभी हालमें ॥ ७३

उपजाति

किला बना है उस कालहीमें,
जो "फोर्ट विल्यँम्" बढके महीमें ।
विख्याति पाया पर-राज्य छीन,
हुए वहा खर्च करोड तीन ॥ ७४

१ यह प्रसिद्ध युद्ध सन् १७५७ में हुआ था और इसी युद्धके विजयने यहा अंग्रेजोंके पैर जमाये । २ शिराजुद्दौला नव्वाब । ३ यही कर्नेल क्लाइव बंगालमें अंग्रेजी राज्यके संस्थापक हुए और पीछे लार्ड बने । ४ यह ऐडमिरल अर्थात् सेनापति थे । ५ "ब्लाक होल" की घटनाके अनन्तर एकही सालमें । ६ अपने भाइयोंका कल्याण । ७ इस नामका किला उन्हीं शूर क्लाइव साहबने सन् १७५७ में बनाना आरंभ किया था जो बीस सालमें पूरा हुआ और उसे बीस लाख पौंड खर्च हुए अर्थात् तीन करोड । ८ शत्रुओंके राज्य । यह किला बहुतही मजबूत और देखने लायक है ।

मन्दाक्रान्ता

धीरे धीरे चहु दिश फिरे, देशका भाग सारा,
देखा जाके, जन वश किये गृत्र धधा पसारा ।
छोटे मोटे कलह झगडे नित्य होते तथापि,
व्यापारी हो प्रबल बनके हो गये ये प्रतापी ॥ ७५

शार्दूलविक्रीडित

म्लेन्छोंका अति ताप था, न कहि था इन्साफ पूरा भला,
थे दु खी सब लोग, धर्म रविका था अस्त होता चला ।
वैसा था अनुकूल काल इनका, विश्वेश की थी दया,
क्या होती फिर देर राज्य बढते ? विस्तार होता गया ॥ ७६

विद्या, उद्यम, धैर्य, साहस, कला, वैसी मिला एकता,
लक्ष्मीको कर हस्तगा, प्रकट की सर्वत्र सत्ता मैता ।
पीछा ला हमको दिया विपुलही "सायंन्स"–विज्ञान–वा,
था संकेत यही दयाल विभुका होना इन्हींसे भ्ना ॥ ७७

१ हाथमें लेना । २ मुसल्मानोंका । ३ धर्मरूपा सूरजका । ४ लोप । ५ हाथमें । ६ सर्व मान्य । ७ "Science"–विज्ञान । ८ योग्यें, ठीक । आज जगत्भरमें जो इनका उद्योग और साहस बढा हुआ है उसका आदि कारण यही है इससे अनक अघटित बातें बना अंग्रेजोंने सबको हैरतमें डाल रक्खा है ।

उपजाति

स्वतंत्रता ले परतंत्रता दी,
दिनेशकोभी नहिं अस्तता दी ! ।
देके उजाला दिनरात भारी,
करे इन्हींकी वह चित्रकारी ! ॥ ७८

वे आग, पानी, चपला प्रकामं
करें इन्होंके दिनरात काम ! ।
क्या ईशने दे निज शक्ति सारी,
दी पंचभूत-प्रभुताऽर्थकारी ॥ ७९

विज्ञान क्या दे न किसे महीमें ?
है मूल "विद्या" उसका सभीमें ।
क्या थे न ऐसे पुरुषा हमारे ?
परंतु हैं, हा ! अब दीन सारे ॥ ८०

१ स्वाधीनता । २ परवशता । ३ सूर्य । ४ छिप जाना, अस्त हो जाना । इस वक्त अंग्रेजोंके राज्यमें सूर्यका अस्त नहीं होता है-अर्थात् राज्यका इतना बडा विस्तार है कि इनके राज्यके एक भागमें सूर्यका अस्त हो जाता है तो दूसरे भागमें साथही उसका उदय हो जाता है । ५ फोटोग्राफी, सूर्यके किरणोंसेही अक्स आती है । ६ बिजली, विद्युत् । ७ चाहा हुआ, इच्छित । ८ बल, अधिकार । ९ पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पंच महाभूतों परकी इच्छित द्रव्यकारक प्रभुता अर्थात् सत्ता ।

वसन्ततिलका

उद्योग, धर्मरति[1], देश-निजाभिमान[2],
स्वातन्त्र्य, ऐक्य, ममता, उपकार, मान।
विद्या, कला, विनय, नीति, समानभाव,
डालें अटूट सब पै अपना प्रभाव॥ ८१

शार्दूलविक्रीडित

ना भूलो, भटको, कहीं मत फिरो, सीखो इन्हींसे यहीं—
बातें, जा परदेशमें[3] कर बडा उद्योग देखो मेंही[4]।
ऐसा सुन्दर शान्त काल तुमको स्वातन्त्र्य पाके कभी—
आने हाथ न, राजभक्त बनके पूरो मनीषा सभी॥ ८२

श्रीकालीजीका स्थान।

उपजाति

ऐसा न कोई स्थल[5] है प्रसिद्ध,
यहा पुराना इतिहास[6]-सिद्ध।
तथापि है स्थान बडा विचित्र,
श्रीकालिकाका[7] अतिहीं पवित्र॥ ८३

१ धर्मकी श्रद्धा। २ देशका और अपना अभिमान, स्वात्मभाव। ३ यूरोप आदि। ४ पृथ्वी। ५ स्थान। ६ इतिहाससे सिद्ध, प्रख्यात। ७ श्री काली माता-कलकत्तमें प्रसिद्ध है।

वसन्ततिलका

जो विश्वधाम[1], जननी, परिपूर्णकाम[2],
प्राचीन[3] वा नव[4] कहीं उसका न धाम ।
भक्तार्थही जब कहीं अवतीर्ण[5] होती,
होता वहा स्थल नया, भवदु ख खोती ॥ ८४

वैसाहि मन्दिर यहा इसका बना है,
प्राचीन तीन शतका सुथरा[6] घना है ।
श्री कालिका शिवंकरा[7] इसमें विराजे,
है उग्रमूर्ति[8] पर भक्तदयार्द्र[9] छाजे ॥ ८५

भुजगप्रयात

हुआ कालिकासे यही कालिकाता,
बना हिन्दकी राजधानी सुहाता[10] ।
हुआ कालिका घाट वैसा प्रसिद्ध,
सदा ठाठ भारी चहू ओर सिद्ध ॥ ८६

१ सारा जगत् है धाम-गृह जिसका वह । २ जिसकी इच्छा पूर्ण है वह, निरिच्छ । ३ पुरातन, पुराना । ४ नया । ५ प्रकट होना, अवतार लेना । ६ सुन्दर, अच्छा । ७ कल्याण करनेवाली, भला करनेवाली । ८ भयकर है मूर्ति जिसकी वह । ९ भक्तोंके लिये दयासे भीनी हुई अर्थात् कृपालु । १० अच्छा, सुन्दर ।

मालिनी

प्रथम जन हुए थे दर्शन क्षेमकारी,
तन निनय यही थी फेर हों पुण्यकारी ।
स्मरण कर बुलाया "रामके लाल" युक्तं–
कर झट उनरा वा मानसें प्रेमयुक्त ॥ ८७

मन्दाक्रान्ता

आतेही मैं प्रथम झट ले "रामके लाल" साथ,
आया माई-दरश करने जोडके खूब हाथ ।
भागि भीड प्रतिदिन यहा प्रेक्षकोंकी प्रपूर्ण !
तौभी माता क्य रह सके पुत्रको देख दूर ? ॥ ८८

प्रार्थना ।

शार्दूलविक्रीडित

हे अम्बे ! करुणानिधे ! सकलकी माता तुही है खरी,
भक्तोंके अवनार्थ तू अवतरी विज्ञानकी वैखरी ।
तू है शक्ति, सशक्त सर्व तुझसे, तेरी त्रिधा शक्ति है,
ऐसी तू, फिर क्यों अशक्त हम है ? पूर्ण न वा भक्ति है ? ॥ ८९

१ कुशल करनेवाले । २ योजना किया हुआ । ३ चित्त । ४ पूरी, खचाखच । ५ रक्षण करनेके लिये । ६ वाणी । ७ शक्तियुक्त । ८ कर्तुम्, अकर्तुम् और अन्यथा कर्तुम्–शक्ति ।

तू अम्बे मधुकैटभ[1]-प्रमथनी, ब्रह्मार्त्ति-संहारिणी[2],
तू हर्त्री[3] महिषासुरादि[4] रिपुकी, इन्द्रादिसत्कारिणी[5]।
मारे शुंभ निशुंभ राक्षस घने, तू रक्तबीजाशनी[6],
चामुंडे! शिर चंड मुंड रिपुके तू काट चंडी बनी॥ ९०

तू है सर्व मतिस्थ[7], चक्र सम वा सारी फिराती मही,
देती तू सबको स्मृति[8]-स्फुरण वा, निष्काम तू कामही[9]।
तू आत्मोन्नतिकारिणी[10], प्रकृति[11] वा माया तुही शक्ति है,
झूठा है सब कारबार जगका, तेरी खरी भक्ति है॥ ९१

तू पूर्णा जगमे निरिच्छ[12] रहती, तू जानती है सभी,
तू देती कुछ मागती न किससे, खाती न पीती कभी।
होता मन्दिरमें अनाथ पशुका क्यों फेर संहार हा!
होना जो निजका प्रशस्त, वह तो जाता रहा दूर हा!॥ ९२

१ मधु और कैटभ नामक दो राक्षसोंको मारनेवाली। २ ब्रम्हाके दुखको दूर करनेवाली। ३ नाशकरनेवाली। ४ महिषका रूप धारण करनेवाले राक्षस आदि। ५ इन्द्रादिक देवोंका सत्कार करनेवाली। ६ जिसका रक्त भूमिपर गिरनेसे उसके सदृश राक्षस उत्पन्न होनेवाले रक्तबीजको खानेवाली। इसके युद्धमें देवोंको बड़ा भय प्राप्त हुआ क्यों कि इसके सहस्रों रक्तबिंदु भूमिपर गिरनेसे उसके सदृश सहस्रों वीर पैदा होने लगे। पर जगज्जननीने उस वक्त ऐसी युक्ति निकाली कि उसका रक्त भूमिपर गिरने न पावे ऊपरका ऊपरही शक्ति चाट ले-इससे वह मरा और सबका भय परास्त हुआ। ७ सबकी बुद्धिमें रहनेवाली। ८ स्मरणशक्ति। ९ इच्छा, आशा। १० आत्माकी उन्नति-प्रगति करनेवाली। ११ जगदुत्पादिका शक्ति, स्वभाव, तबियत। १२ निष्काम।

केसा आत्मबलि प्रसिद्ध जगमे धर्मार्थ था ? देशकी–
रक्षामें ? तनुका त्वदर्थ बलि वा ? हत्या न थी भेदकी ।
थे रानों-कुल वान्य वीर सबही प्रख्यात, सन्ताप हा !
लेते प्राण तवार्थ दीन पशुके, कैसा महा पाप हा ! ॥ ९३

तूही है गति सर्वकाल जगकी, सर्वत्र तू है भरी,
तू मारी बनती, अकाल कहिं वा तू प्लेग हो ऊभरी ।
होता आत्मबलि-प्रदान अब ना–तू जान ऐसा कहीं,
लेती है स्वयमेव आत्मबलि वा जाने नहीं एकही ! ॥ ९४

है वैज्ञानिक काल आज, नहिं है वैसी महा यामिनी,
जो देके बलिको निराश्रित करे पुत्रादि वा कामिनी ।
तू लक्ष्मी सबकी प्रधान मति है, विद्या महा मंगला,
होके तू अवतीर्ण रक्ष हमको वाणी रमा संग ला ॥ ९५

१ आत्मसमर्पण, आत्मत्याग । २ अपने धर्मके लिये । ३ त्वत्–अर्थ=तेरे कारण । ४ भेद । ५ चित्तौरके महाराना लक्ष्मणसिंहने अपना और अपने पुत्राका बलिदान किया था । महाराना प्रतापसिंहने उमर भर युद्ध करके अपने राना कुलकी पवित्रता कायम रक्खा था । पद्मिनी और कृष्णाकुमारीका आत्म बलिदान किसीसे छिपा नहीं है । वैसेह अपने पातिव्रत्यके रक्षणार्थ हजारों स्त्रिया चित्तौर गढमें जल मरीं–यह बातभी किसीसे छिपा नहीं है । ६ वा–अन्य=अथवा दूसरे । ७ तव-अर्थ=तेरे कारण । ८ रस्ता उपाय । ९ महामारी, मारनेवाली । १० अपनी आत्माका बलिदान । ११ अंधेरी रात, अधाधुधका समय । १२ कल्याण करनेवाली । १३ सरस्वती, विद्या । १४ लक्ष्मी, धन, वैभव । १५ अपने साथ ।

मालिनी

वस वस ! अब देवी कालिके[1] कालरात्री,
मत कर जगदम्बे ! नाश तू लोकधात्री[2]।
शरण अब हमारी एक तूही भवानी,
तव गति, मति, इच्छा, मा ! किसीने न जानी॥ ९६

शालिनी

आता था मैं दर्शनोंको पुकार,
भैभी[3] की है प्रार्थना वारवार।
वारवार प्रार्थना फेर भी है,
मेरी अम्बे, रक्ष सारे सै-भी है॥ ९७

रामप्रेस।

द्रुतविलम्बित

कनकसुन्दर[4] जो मरुभाषिणी[5]
छप रही नित थी उपकारिणी।
वहिं रहा नव मुद्रण-यंत्रमें[6]
मधुर राम सुनाम कुतंत्रमें[7]॥ ९८

१ देवीका एक नाम है। २ लोकजननी। ३ स भी = भय-युक्त। ४ इस नामका एक उपन्यास। ५ मारवाडी बोलनेवाली अर्थात् मारवाडा भाषाकी। ६ छापखानेमें। ७ मीठा रामका नाम है जिसका ऐसे अव्यवस्थित रामप्रेसम।

उपजाति

वहां मिली थी लघु, एक कोठडी,
रहें उसीमें सह यन्त्रणा बडी।
आती सदा याद समीप हो खडी,
अंग्रेजहन्त्री वह काल-कोठडी॥ ९९

वसन्ततिलका

जो "राम प्रेस" गृहसंस्थितें गर्भ लीनें,
हो आज विस्तृत जरा प्रतिबन्ध हीनें।
पापी कराल वध-कारक "ब्लाक होल"
मानो हुआ फिर वही अवतीर्ण गोल॥ १००

यन्त्रेश शुद्ध मरुदेशज रामलाल,
है श्रीनिवास जन एक वहां दलाल।
है गीधके निकट काक जहां प्रधान,
होता पवित्र, अपवित्र वहां विधान॥ १०१

१ वेदना, दुःख, पीडा। २ अंग्रेजोंको मारनेवाली। ३ "ब्लाकहोल"। ४ घरमें। ५ बीचमें। ६ लंबा, फैला हुआ। ७ रोकटोक विनाका। ८ छापखानके मालिक। ९ सीधेसादे। १० पक्के मारवाडी। ११ यह एक लाहिया उपनाम के अग्रवाल महाजन हैं। रामलालजी इन्हींकी सलाहसे चलते थे। यद्यपि वे पक्के मारवाडी हैं तो भी इनके आगे उनका कुछ नहीं चलता था।

ाकी दुर्दशा।

ठुवा बाजार गुल्जार था,
नता कामीजनोंको रँवा ॥
क्ति तब है, कैसी स्त्रिया ला धरी,
नस उन्हें वेश्या बनाके खरी ॥ ॥ १०८

गमे कीर्त्ति कैसी खिली है ?
जो सती हो जली है ॥ ।
जके, कामेलीला विचित्र,
कर रहीं ? हो गया काल चित्र ॥ ॥ १०९

। दोष उनका, दोषी हमी लोक हैं,
ह, उनको हा ! वेचते शोक है ! ॥

ालोंको, व्यभिचारियोंको। २ योग्य, ठीक
ी पतिको प्यारा माननेवाली। ४
जन। ७ छोटी कन्याके साथ
८ कन्याविक्रय।

शालिनी

चोलटोले, लालबाजार-छोरे,
शोभों, श्यामें प्रान्त, बागान चोर ।
मुर्गीहट्टा हाट, बाजार राधों,
देखे सारे छोटके एक आरा ॥ १०५

मालिनी

खिदिरेपुर, भवानी, कालिके घाट-भाग,
अलिपुर पथ वैसा देखने योग्य नाग ।
तट-पथ बहु लना रम्य गगा नदीका,
नव पथ हवडेका, सल्कियो मार्ग नीका ॥ १०६

मन्दाक्रान्ता

तूलपट्टी लघु पथ जहा मारवाडी प्रधान,
चौरस्ता है सब शहरमें ख्यात सट्टानिधान ।
छोटासा है यहिं पर वही रामका छापखाना,
दैवेच्छासे यहिं हम रहें—हाल जाता लिखा ना ॥ १०७

१, २ राजमार्गके नाम । ३ आखरी भाग । ४ शोभा बाजार । ५ श्याम बाजारका मध्य भाग । ६ चोर बागान । ७ एक बाजार । ८ राधा बाजार । ९ शहरके बाहरका एक रस्ता । १० भवानीपुर । ११ काली माताके निकटके घाटका भाग १२ गगा किनारेका माग । १३ गगापारका एक मार्ग । १४ छोटी गली ।

स्त्रियोंकी दुर्दशा।

शार्दूलविक्रीडित

वैसा है निकट प्रसिद्ध मडुवा बाजार गुल्जार वा,
सायकाल जहा सुदृश्य बनता कामीजनोंको रैवा ॥
हाहा! दैव! विचित्र शक्ति तव है, कैसी स्त्रिया ला धरी,
ना दीखा जिनका कहीं नख उन्हें वेश्या बनाके खरी!! ॥ १०८

मन्दाक्रान्ता

हिन्दू स्त्रीकी सकल जगमें कीर्त्ति कैसी खिली है?
भर्तृप्राणा विरहभयसे जो सती हो जली है!!।
वेही प्यारा स्वपति तजके, कामलीला विचित्र,
हा धिक्! कैसी अब कर रही? हो गया काल चित्र!! ॥ १०९

शार्दूलविक्रीडित

वे दोषी नहि है, न दोष उनका, दोषी हमी लोक हैं,
वेजोडी करते विवाह, उनको हा! वेचते शोक है!॥

१ स्त्रियोंकी इच्छा रखने वालोंको, व्यभिचारियोंको। २ योग्य, ठीक। ३ पति है प्राण जिनका अर्थात् प्राणसे भी पतिको प्यारा माननेवाली। ४ कामदेवकी क्रीडा=व्यभिचार। ५ समय। ६ अजब। ७ छोटी कन्याके साथ बूढेका और बडी कन्याके साथ छोटे वरका, अनमेल। ८ कन्याविक्रय।

देते त्रास बना गुलाम, कुछ भी विद्या पढाते नहीं,
लज्जाहीन बुरा मना न करते अश्लील गाना कहीं ॥ ११०

उपजाति

सेठानियोंके पगमें लगाती,
जो मेहदी, गीत अभद्र गाती ।
पुरोहितानी, उनका कुसंग,
करे न कैसा फिर नीति-भंग ? ॥ १११

जो देवहूति प्रभृति स्त्रियां थीं,
पवित्र कैसी उनकी क्रिया थी ? ।
ये हो उन्हींकी कुलकन्यका हा !
धधा करें गर्हित कर्मका हा ! ॥ ११२

रसोइया ब्राह्मण ग्वाल सिद्ध,
"गोपाललीला" जिनकी प्रसिद्ध ! ।
सेठानियोंके निज कारभारी,
ये ही बने हैं कर वार भारी ! ॥ ११३

१ ग्राम्य, गालियां, सीटने । २ बुरे, भद्दे । ३ नीतिका भंग अर्थात् बुरे काममें प्रवृत्त होना । ४ कपिल महा मुनिकी माता जो विदुषी और ब्रह्मनिष्ठ थी । ५ कुलमें उत्पन्न हुई हुई कन्या । ६ नीच । ७ घरमें काम करने वाला मज्दूर, गोंडिया, मुटिया । ८ कृष्णके समान क्रीडा ।

कुसंगसे भ्रष्ट बने विचारी[1],
अज्ञान ये तो अनलौ[2] विचारी।
समीप जो हो, लिपटे लतौ[3] सी,
स्वधर्म खोती बन पापराशी[4] ॥ ११४

वसन्ततिलका

खोते नहीं हम कभी व्रत एकपत्नी[5],
होते बुरी न करने इनको प्रयत्नी[6]।
प्रेमप्रभाव[7] रखते समभाव वैसा,
बाजार आज इनका लगता न ऐसा ! ॥ ११५

दासी, गुलाम, बटकी[8] नहि है हमारी,
अर्धांगिनी[9] नर-खानि[10] प्रिय मित्र नारी।
पूजार्ह[11] नित्य कहते स्मृति-शास्त्रकार[12],
माना न हा ! तब हुआ उलटा प्रकार ॥ ११६

१ विचारवान्, ज्ञाना। २ बलहीन, विचारहीन। ३ बेलके समान। ४ पापकी भागिनी। ५ अपनी विवाहिता स्त्रीके सिवा अन्य स्त्रीको माता समान समझना ऐसा। ६ प्रयत्नवान्, उपाय करनेवाले। ७ प्रेमका प्रताप। ८ लौंडी। ९ स्त्री पुरुषका आधा अंग माना गया है इस लिये उसे "अर्धांगिनी" कहते हैं। १० नरकी खान-"नारी निन्दा मत करो, नारी नरकी खान॥ जिस नारीसे ऊपजे, ध्रुव प्रल्हाद समान"। ११ पूजा-अर्ह=पूजाके-सत्कारके योग्य, "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफला क्रिया॥" जहां स्त्रियोंका सत्कार होता है वहां देवता रममाण होते हैं। जहां इनका सत्कार नहीं होता वहां सब क्रिया निष्फल होती हैं-इत्यादि स्मृतिकारोंने बहुत लिखा है। १२ स्मृति और शास्त्रको बनानेवाले।

होता चला प्रतिदिन क्षय शुद्धे बीज,
हा ! देश है इस लिये दुर्लभी न चीज ! ।
जाता रहा स्वकुल–देशें–निजाभिमान,
हा ! हन्त ! धर्म न रहा, धन, धान्य, मान ॥ ११७

दक्षिणोत्तर भाग।

स्रग्धरा

देखे बाजार सारे, फिरकर सगरे भाग नैनों निहारे,
गोरों है दक्षिणीय, प्रतिकृति नव है, मार्ग है स्वच्छ सारे ।
काला है उत्तरीय प्रति पथ गृह वा कौलका कौलराज ।
गोरा काला समान क्षण न बन सके पूर्ण सिद्धान्त आज ॥ ११८

दक्षिण भाग।

शार्दूलविक्रीडित

भारी दक्षिण भागमें खलबली अंग्रेज बाजारकी,
चाहा माल कमाल, एक दर, ना मींमा खरीदाँरकी ।

१ निखालस, बे मिला हुवा। २ अपने कुलका, देशका और अपना अभिमान। ,
सफेद, शुभ्र, यहा बहुधा अंग्रेज लोग रहते हैं । ४ दक्षिण भाग । ५ चित्र,
ी, प्रतिमा । ६ उत्तर भाग । ७ काला, यम, समय । ८ कालका राजा अर्थात्
मैला, खराब । ९ बहुत बढिया । १० माल खरीदने वालोंकी ।

व्यापार स्वयमेव मूर्त[1] सबको मानो दिखाता यहा,
कैसा है अपना प्रभाव जगमें, वर्चस्व[2] सत्ता महा ? ॥ ११९

मालिनी

अति रुचिर किये हैं "पार्क"[3]से मार्ग-भाग,
पर विशद सभीसे "ईडेन"[4] श्रेष्ठ बाग ।
समय समय बाजे "बेण्डें"[5] एकत्र होते—
सकल, तरुलता[6] की खा हवा ताप खोते ॥ १२०

पद पद बिजलीकी रोशनी हो नितान्त,
अति सुखद यहाका रम्य होता दिनान्त[7] ।
पवन सुरभि[8] लेके ग्रीष्म-सन्ताप-हारी[9],
श्रम सब हर लेता, शान्त गंगाविहारी[10] ॥ १२१

शार्दूलविक्रीडित

कैसा रम्य पदार्थ सग्रह-गृहे[11] ? प्राचीन वैसी नई,
चीजें ला विविधा[12] असख्य जिसमे सर्वत्र रक्खी गई ।

१ मूर्तिमान्, प्रत्यक्ष । २ बडप्पन, श्रेष्ठता । ३ रस्तोंमेंके छोटे छोटे बैठकी बगीचे । ४ इस नामका एक बाग । ५ अंग्रेजी बाजा । ६ झाड और बेल । ७ सायंकाल ८ सुगध । ९ धूपकालका ताप हरनेवाला । १० गगाके जलपर फिरा हुआ । ११ जहा नाना प्रकारकी वस्तुओंका सग्रह है वह, "म्यूजियम" अजायब घर । १२ नानाप्रकारकी ।

होती है मति मुग्ध देख रचना प्रत्येक ही भागकी,
आती याद विचित्र लुप्त अपने साम्राज्यके भागोंकी ॥ १२२

मन्दाक्रान्ता

क्या क्या देखें ? अगणित यहा रम्य चीजें हमारी,
देखी खासी कल कुशलता स्मारकप्राप्त सारी ।
होता भारी स्फुरण करने वस्तुसंग्राह्य देश,
था भी वैसा, पर अब नहीं शिल्पविद्या-प्रवेश ॥ १२३

स्रग्धरा

बागीचा श्वापदोंका विविध तरुलता-पूर्ण सौंदर्यराशी,
भॉलूसिंहादि वन्यें प्रबल पशु जहा देशदेशान्तवासी ।
नाना पक्षी मृगादि, स्थलजलचर है सर्पभी उग्र भारी,
अत्यन्त प्रेक्षणीयाकृति पथ जिसके दैव्य आश्चर्यकारी ॥ १२४

१ मोहित, स्तब्ध । २ वस्तुसंग्रहके स्थानके भाग । ३ लोपा हुआ, नामशेष । ४ सार्वभौम राज्य । ५ दैव, नसीब । ६ यत्न । ७ कारीगिरी । ८ यादगार, स्मरणकरने योग्य । ९ जोश । १० पदार्थोंका संग्रह जिसमें होना योग्य ऐसा । ११ कला, कुशलता, कारीगरी इत्यादि विद्याका प्रवेश । १२ हिंसक पशु । १३ झाड बेलसे भरा हुआ । १४ रीछ, सिंह आदि । १५ वनमें रहने वाले । १६ देश देशान्तरके । १७ पृथ्वी और जलमें रहन वाले । १८ एक विभागमें नाना प्रकारके सर्प रक्खे हुए हैं । १९ देखनेके योग्य है रचना जिसकी । २० मार्ग । २१ देखाव, नि संशय यह अलीपुरका बगीचा देखने योग्य है ।

मालिनी

अनुपम डलहौसी-स्क्वेअर-प्रान्त-भाग,
सर्कल पथ, वैसे लाटके हर्म्य बाग ।
अगणित गृह, वाडी, राजकार्यालयादि,
रुचिरतर घने है राजलक्ष्मीप्रसादी ॥ १२५

चपल चपल विद्युत् तार—गामी बनाके,
सब जगह चलाई "ट्राम" पत्ता खिंचाके।
विधुसम उजियाला स्वच्छ जिस्से कराया,
अघटित घटना की, खूब विज्ञान पाया ॥ १२६

शार्दूलविक्रीडित

विद्युद्यद्यपि की रसायनगता, वा तारमें ला भरी,
गाडी यत्र चला पदार्थगत की तौभी स्वतन्त्रों खरी ।

१ डलहौसी स्क्वेअर नामक रस्तेका मध्यभाग। २ बडे बडे रस्तोंमें सरकल
क्ये गये हें वे सरकल रोड कहलाते है। ३ गवरनर जनरलके। ४ राजमहल। ५
चेहरिया, न्यायालयादि। ६ अतिशय सुन्दर। ७ राजलक्ष्मीका प्रसाद है जिसम। ८ वि
ली। ९ तारमें चलनेवाली। १० बिजलीसे चलनेवाली ट्राम गाडी। ११ चद्रमाके
मान। १२ विद्युत्—यदि—अपि=जो कि बिजली। १३ रसायन क्रियामें। १४ पदार्थमें।
५ स्वच्छद, स्वाधीन।

४

होती वैक्र कभी, न काम करती, या स्पर्शसे मारती,
तेजस्वी व्यसनोर्त्त हो न उसकी जाती छिपाई तैती ॥ १२७

शिखरिणी

अहा! गगाधारा नगर निच कैसी वह रही?
वडी छोटी लेके तरणि-सखिया साथ सनही।
चली मार्नावेशा जलैधिनिकट क्लेश-हरणी,
अकेली ना सोहे पति विन कभी दूर रमणी ॥ १२८

भुजगप्रयात

बधे हैं किनारे कहीं खूब घाट,
लगा प्रेक्षकोंका जहा ठाटवाट।
हजारों करें स्नान आके प्रभात,
करें देवपूजा सभी भात भात ॥ १२९

मालिनी

हर हर! पर देखा स्त्रिजनोंका नहाना—
पुरुषनिकरके हो वीच, लज्जा वहाना।

१ टेढी। २ छूनेसे। ३ व्यसन-आर्त=सकटसे दु खी। ४ तेज, प्रभाव। ५ जहाज, आगबोट मानो जिसकी सखिया है उनको। ६ मानके आवेशसे अर्थात् वेगसे। ७ समुद्रके नजदीक। ८ पुरुषका समुदाय, आदमियोंकी भीड।

गतहृदय यहाके लोक कैसे ? न घाट–
अलग कर न्हुलाते, वा बना अन्य बाट ॥ १३०

स्रग्धरा

छोटी मोटी घनेरी लहरि गति चपला आगरोटें सुहाती,
आती जाती हिलाती सब जल, लहरी तीर पै ला बहाती।
होता है ज्वारभांटा तब बहु हिलती, खूब सीटी बजाती,
ऐसी है धूमधाम प्रतिदिन इनकी, तीर भारी सजाती ॥ १३१

शालिनी

यात्री भाडा नाविकोंसे जचाते,
डोंगेवाले धूम भारी मचाते।
गंगाजीका मध्य–धारा–विहार,
देता शान्ति, श्रेष्ठ पुण्योपहार ॥ १३२

शार्दूलविक्रीडित

दोनों तीर भरी हुई लहलहा गंगा चली जोरसे,
मीलें, यंत्र, गृहादि बाग तट पै सोहें घहू ओरसे।

१ हृदयशून्य, विचारहीन। २ धारे चलनेवाली। ३ अच्छी देख पड़ती। ४ पानीका तरंग। ५ समुद्रके पानीका चढाव उतार। ६ नाव चलानेवाले। ७ पुण्यकी भेंट।

कैसा दृश्य मनोहर प्रकृतिका तीरस्थ लगा बना ?
मानो पङ्क्ति रची सुदृष्टिपथके सोपानकी शोभना ॥ १३

मालिनी

पुल नहिं हबडेका, बाहु मानो धराने,
अति ललित पसारा, मेल पूरा कराने ।
उभय तटनिवासी त्रास कोई न पावें,
हिलमिल अपनी वे नित्य मैत्री बढावें ॥ १३

पृथ्वी

अनन्तपथ सुन्दर प्रभुपदाब्ज मानो यहा,
धरा सकल नापके त्रिपथगागत क्लेशहो ।
हुआ पुल यही,रचा प्रकृति अस्सें वा पादका,
तभी चरणजो वही पदतले पवित्रोदका ॥ १३

१ स्वाभाविक कारीगरी, निसगरचना । २ तीरपरका । ३ कतार । ४ अच्छो दृष्टिक
मार्ग । ५ जीना, सीढी । ६ सुन्दर । ७ जिसका अन्त नहीं वह आकाश उसका मार्ग
८ ईश्वरका पदकमल, यह वामनावतारके पदका वर्णन है, जिसने बटुक बनके बलिसे त्रिपाद
भूमि मांगी थी पर दोही पादमें सब भूमिका आक्रमण करके तीसरा पाद बलिके सिरपर
धरके उसको रसातल पहुचाया। ९ पृथ्वी। १० भागीरथीमें । ११ दुःख दूर करनेवाला
१२ स्वाभाविक रचना । १३ फोटो । १४ गंगा, भगवान् विष्णुके चरणसे निकली है।
१५ पैरके नीचे । १६ शुद्ध है जल जिसका ।

मन्दाक्रान्ता

गगा धारा लघु, पर वडा द्वार व्यौपारका है,
आने जाने सुगम बहुधा मार्ग यूरोपका है।
वैसाही है उभय तटका जोड, सन्मार्गकारी,
भारी लगा, तरैल हवडा-सेतु चित्तापहारी॥ १३६

उत्तर भाग।

शार्दूलविक्रीडित

काढा है नव मार्ग हारिसनका सीधा यहींसे भला—
लगा, विस्तृत स्यालँदातक जहा विद्युत्प्रभा निर्मला।
है बाजार वडा विशाल वसती काले जनोंकी यहीं,
काला है सब कारबार यहिंका गौरत्व है ना कहीं॥ १३७

मन्दाक्रान्ता

मैला कूडा सन कहिं पडा पूतिगध-प्रयुक्त,
काली काली मलिन गलिया, मार्ग है कीचयुक्त।
होती वैसी ठठ बहुत ही मालकी गाडियोंकी,
खोटी होती गमन रुकके मार्गगामी जनोंकी॥ १३८

१ मार्ग। २ अच्छा रस्ता करनेवाला। ३ हिलनेवाला, हल्का। ४ यह एक स्टेशनका मार्ग है। ५ बिजली की रोशनी। ६ गोरापन। ७ दुर्गन्ध, बदबू।

शार्दूलविक्रीडित

झाड़ू ना फिरता बरानर जहा, रस्ते कहीं साफ ना,
होती है बरसात, कीच उडके पोषाक होती फैना[1]।
पानी ना बहता, वहीं सडकमें होता इक्ट्ठा सदा,
रस्ता हो जलैपूर्ण[2] "ट्राम" रुकती! कैसी गति त्रासदा[3]?॥ १३९

मालिनी

पदपथ[4] नहिं पूरे, धूम है गाडियोंकी,
अति कठिन दशा है पादचारी[5] जनोंकी।
अलग अलग कोई है न बाजार एक,
कहिं कुछ कहिं कैसा! मिश्र[6] है एकमेक॥ १४०

स्रग्धरा

वे राजा[7] मारवाडी यहि पर रहते, फाटका वा दलाली,
अंग्रेजोंकी सदाही कर बहु धनवान् जो हुए भाग्यशाली[8]।

१ खराब। २ पानीसे भरा हुआ। ३ त्रास देनेवाली। ४ पगरस्ते "FOOTPATH" ५ पाव चलनेवाले। ६ मिले हुए। ७ सन १९०४ जनवरीमें मारवाडी एसोसिएशनका वार्षिकोत्सव हुआ था, उस वक्त अपनी वक्तृतामें बाबू दुल्हीचन्दने "कलकत्तेके मारवाडी राजा हैं' ऐसा कहा था—उसीका यहा अनुलक्ष्य हे। ८ भाग्यवान्।

लेडी, गाड़ी, बगीचा रस, अब बहुधा सीखके सभ्य चाल,
चश्मावूटादिधारी, चुरुटमुख, बडे हो गये सेठ लाल ॥१४१

मन्दाक्रान्ता

भोले भाले सरल मतिके पूर्वजोकी सुचाल–
छोडी, भूलें सुपथ उनका, हो गया गोलमाल ! ।
सीधा वैसा अन नहिं रहा, हो चला वक्र काल,
विद्याही है इस समयमे सर्वदात्री विशाल ॥ १४२

शार्दूलविक्रीडित

भारी खर्च बढा, कुरीतिपथसे लक्ष्मी गमाई सदा,
कन्या पुत्र पढा न शिक्षित किये, न स्वोन्नति श्रीप्रदा।
सम्बन्धक्रम, भूषणादि विधि वा, कैसी विवाह-प्रथा–
हो ली अद्भुत ? नाशकारक तथा मृत्युक्रियाकी कथा ! ॥ १४३

१ छोटी लाडी, बडी लाडी और प्यारी लाडी। २ सब कुछ देनेवाली। ३ अपनी उन्नति–सुधार। ४ लक्ष्मी देनेवाली, धन बढानेवाली। ५ सगाईका तरीका। ६ सगाई विवाहके वक्त जेवर इत्यादिकोंकी विधि। ७ विवाह की रीत। ८ मृतकश्राद्ध, मौसर। मारवाडी जातिने सगाइ, विवाह और मृत्यु कियामें इतनी फजूल खर्चा बडा रक्खी हैं जिससे कितनेही तबाह हो गये, दीवालिये बन गये और बरबाद हो गये तौ भी–अफसोस ह–इस कुरीतिको नही छोडते ! ।

मालिनी

उपनेयन-कथा वा ब्रह्मचर्यादि भूल,
कर यहु शिशु-वृद्धोद्वाह की खूब भूलें।
निज कृषिपशु-रक्षा धर्म वाणिज्य छोडा,
स्वकुलपथ निसार, भ्रान्त हो पाप जोडा ! ॥ १४४

शिखरिणी

"इय गेहे लक्ष्मी" कविवचन ये भूल, अब हा !
स्त्रिया की है दासी विगतभय, लज्जा सब बहा।
सिखाई ना विद्या, गृह उचित वा शिक्षण दिया,
पतिप्रीतिश्रद्धा रहि न कुछ भी संकर किया ! ॥ १४५

१ जनेऊ, मौंजीबन्धन। २ बीस वर्षतक पूरा ब्रह्मचर्य रखकर विद्याभ्यास पूर्ण होनेक अनन्तर विवाह करना इत्यादि। ३ बाल और वृद्ध विवाह। ४ गफलतें। ५ "कृषिगोरक्ष्यवाणिज्य वैश्यकर्म स्वभावजम्" अर्थात् खेती, गौका पालन और व्यौपार ये वैश्योंके स्वाभाविक कर्म हैं-वे खेती और गोपालन। ६ व्यौपार। ७ पूर्वजोंका माग, अपने कुलका रस्ता। ८ भ्रान्तिगत हो। ९ "यह घरमें लक्ष्मी है" भवभूतिने उत्तररामचरितमें यह पद्य लिखा है-"इय गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिनयनयोरसावस्या स्पर्शो वपुषि बहुलश्चन्दनरस ॥ अय कण्ठे बाहु शिशिरमसृणो मौक्तिकसर किमस्या न प्रेयो यदि पुनरसह्यो न विरह" । १० जिनका भय जाता रहा है ऐसी। ११ पतिमें प्रेम और श्रद्धा। १२ मिश्रीकरण, वर्णभ्रष्टता, गीतामें कहा है-"स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकर। संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च"॥ अर्थात् स्त्रीजाति बिगड जानेसेही वर्णसंकर होता है।

इन्द्रवज्रा

गाती फिरे गीत गली गली हा[1]
अश्लील वाणी मुखसे चली हा[1] ।
वेटी वहू जान न मार्ग जाती,
होते खुशी छेड उसे स्वजाति[1] ॥ १४६

वसन्ततिलका

जो गा सके न कुलटा[2] अपशब्द नीच–
गाती पिता स्वजन बन्धु समाज बीच[1] ।
होते प्रसन्न सुनके, उलटे मजाक–
हा हा[1] करें सब, कहा फिर लाज धाक ? ॥ १४७

शार्दूलविक्रिडित

देखे हैं सब "हाय हाय" करते श्रीमान्दारिद्री तथा,
"पैसा हाय वना" स्वधर्म कुलके उद्धारकी ना कथा[1]।
विद्या, देशसुधार याद इनको आवे कहासे भला ?
सारा विश्व जहा "स्वधाम[3]" जिनको मण्डूकसा[4] एकला[1] ॥ १४८

१ मारवाडी । २ वेश्या, व्यभिचारिणी । ३ अपना घर ४ मेंडक जैसा–"कूपमण्डूक-न्याय" अर्थात् मडकको अपना कुवाही सारा जगत् होता है ।

हरिणी

हर हर ! तभी होना है "शायलाक"[1] समान ही,
विदित इनका भागी, व्यौपार दूँढ छिपा नहीं।
निज पर न जाने वा, पैसे बिना पहिंचान ही,
मनुज धनके वास्ते, क्या क्या अहा ! करता नहीं ? ॥ १४९

वसन्ततिलका

खर्चे हजार लगता जन एक पैसा,
वैसे हजार लगते तन दे न पैसा ! ।
छोडे न बन्धु सुतको कभि एक पैसा,
देते पर प्रबलको प्रिय सर्व पैसा ॥ १५०

इन्द्रवज्रा

है ऊट सर्वाहक शीघ्रं गामी,
है बाजरा अन्न कठोर नामी।
है चर्म-पानी मैरु देश वैसा,
होता सदा अंकुर बीज जैसा ॥ १५१

१ यह एक यहुदी इतना दुष्ट व्याजखोरा था कि जिसने रुपयेके बदलेमें एन्टोनियोके शरीरका मास काट लेनेमें बेहद निर्दयता दिखाई थी। २ कपट। ३ जबरदस्त। ४ ले जानेवाला वाहन। ५ जल्द चलनेवाला। ६ चमड़ेका पानी ७। मारवाड, निर्जलप्रदेश

शार्दूलविक्रीडित

देके नाम "असोसिएशन" सभा, "कामर्स" की "चेम्बर",
खोली वैश्यसभा यहा, वहु हुए उत्साहसे मेम्बर।
वैसी शुद्ध-पदार्थ-विक्रयकरी दूकान एकाध वा,
गोशाला, विधवासहायक खुली फडप्रथा भी नवा॥ १९२

वसन्ततिलका

विद्यालय प्रवर खोल किया घनेरा–
विद्या-प्रचार, तब भी न मिटा अंधेरा।
चन्दा किया प्रवल साहससे इकट्ठा,
तौभी परस्पर मिटी न समाजठठ्ठा॥ १९३

शार्दूलविक्रीडित

क्या होता? जव लो सुधार घरका होने न आदर्श हो,
क्या भारी पडता प्रभाव किस पै सम्पूर्ण सदर्श हो।
विद्यासन्मतिहीनको न मिलते सत्कीर्ति सन्मान ही,
जन्मा है वहि जो "कुलोन्नत करे" वैसा न—जन्मा नहीं॥ १९४

१ मारवाडी एसोसिएशन। २ "चम्बर आफ कामर्स"। ३ शुद्ध पदाथ वेचनेवाली। ४ पींजरापोल, गायें पालनेकी जगह। ५ विधवाओंकी सहायता करनेवाली। ६ नई, अच्छी। ७ मारवाडियोंका विशुद्धानन्दविद्यालय। ८ विद्या पढाना। ९ दपणस्वरूप, प्रतिविम्बरूप, सन्मार्गगामी। १० उत्तम दीखनेवाला। ११ कुलको ऊचा करना–श्रेष्ठ करना।

होली का जलसा विचित्र इनका देखा यहा, दैव हा !
होता है फिरना अगम्य पथमें, लज्जादि देते वहा ! ।
मिट्टी धूल उडा विनोद करते अश्लील बातें सुना,
फेंके पाग,करे खराब कपडे—सन्मार्ग कैसा चुनो ? ॥ १९५

वसन्ततिलका

माता पिता वहिन बान्धव को न माने,
रस्ते चली युवतिको फिर कौन जाने ? ।
टंटा फिसाद करते पैरको भि छेड !
हाहा ! अदालत करे इनकी निवेड ! ॥ १९६

भुजगप्रयात

जहा रोशनीका नया ठाटवाट,
वहा मारवाडी गये भूल वाट ! ।
मिली सभ्यता ना, न की देश-सेवा,
किये दो धँडे वा, लडे बन्धुसे वा ! ॥ १९७

दिखाया कभी ना कहीं प्रेमभाव,
नहीं मित्रता मेल, रूखा स्वभाव ।
न की बात प्यारी, न सची किसीसे,
रिझाया न जी साथियोंका खुशीसे ॥ १९८

१ स्वीकार करना। २ स्त्री। ३ दूसरी जातके लोगसे भी। ४ सुधारा। ५ जातके दो दल।

इन्द्रवज्रा

"ऐड्रेस" लेके तुमको कहा था–
क्या लाटने ? गौरव क्या रहा था ? ।
भूले न होंगे ? घरका सुधार,
क्या क्या किया ले किससे उधार ! ॥ १५९

स्रग्धरा

राजा होता वही जो सब जन अपने हाथमें ले चलाता,
माने आज्ञा जिसीकी सब, सब जनको नीतिगामी बनाता ।
आज्ञा माने न कोई, घर तक जिनका अल्पही शब्द जाके,
कैसे राजा बने है ? हर हर ! जब ये मारवाडी प्रजाके ! ॥ १६०

शार्दूलविक्रीडित

सत्ता है प्रभुकी अगोध, उसकी जाने न कोई कला,
क्या था देश महा बली ? अब वही कैसा हुआ बेकला ।
चारो वर्ण समान-भाव, अतुला थी धर्मश्रद्धा तथा–
स्वार्थत्याग, परोपकार जिनका कैसा सुविख्यात था ? ॥ १६१

१ मानपत्र–बंगालके श्रीमान् छोटे लाटको मारवाड़ी एसोसिएशनका तरफसे दिया गया था । २ सन्मान । ३ नीतिसे चलनेवाले । ४ छोटासाभी । ५ गहरा, दुर्जय । ६ विभूति, सामर्थ्य । ७ अपने अर्थका त्याग । ८ बहुत प्रख्यात, बड़ा मशहूर ।

भुजगप्रयात

करेगा कभी ईश होके प्रसन्न,
कभी ना कभी देशको सोपपन्न।
अभी ज्ञान होता चला एकतारा,
चढेगी कभी धर्मकी भी पताका ॥ १६२

बंगाली साहित्य ।

स्रग्धरा

जाना बंगालियोंका कुछ कुछ लिखना, भाषणादि प्रकार,
वैसे ग्रन्थादि देखे, कुछ कुछ उनका ज्ञान साहित्य-सार।
विशा भाषा उन्होंकी सरस बहुतही, श्रेष्ठ देशाभिमान—
पूरा पूरा भरा है, विनय नय सदा प्रेम-भावप्रधान ॥ १६३

पृथ्वी

नवीन पथ धर्मका रच समाज सोसाइटी,
सुधार अपना किया स्वकुलकी अविद्या हटी।
कमाल निज काजमें बहुत की सुधासार ही,
प्रबन्ध कविता रची, युवतिमूढता ना रही ॥ १६४

१ कलादिकोंसे युक्त । २ काव्यादि साहित्यका सार । ३ प्रेमका भाव है मुख्य जिसमें । ४ ब्रह्मो समाज । ५ सभा, परिषत् । ६ अज्ञान, अंधेरा । ७ अमृतका सार । ८ स्त्रियोंकी मूढता ।

इन्द्रवज्रा

साहित्य-भाडार[1] अटूट भारी,
है ग्रन्थकर्त्री[2] कुलशील[3] नारी।
है लोक सशोधक[4] सत्त्वभाव,
बगाल-भू है प्रथित-प्रभाव[5] ॥ १६५

हिन्दी भाषा।

मालिनी

इस समय यहा है हिन्दिके पत्र तीन,
सुमति, कुमति—वासी[6], मित्र[7]—वार्त्ता[8] नवीन।
अति विशद पुरानी हिन्दकी राजधानी,
शिशुमति[9] पर हिन्दी, मातृभाषा अजानी ॥ १६६

भुजगप्रयात

बनेगी यही राष्ट्रभाषा[10] प्रधान,
वही नागरी वर्णमाला निधान।
नहीं लक्ष्य जाता इन्हीं पे हमारा,
इसीसे हुआ है वृथा जन्म सारा ॥ १६७

१ साहित्यका खजाना। २ ग्रथ रचने वाली। ३ कुलवती, शीलवती। ४ खोज करनेवाले। ५ प्रसिद्ध है प्रभाव जिसका। ६ हिंदी बगवासी पत्र। ७ भारत मित्र पत्र। ८ हितवार्त्ता पत्र। ९ बालकबुद्धि। १० देशव्यापी भाषा।

मन्दाक्रान्ता

कैसी भाषा सरल मधुरा आज हिन्दी हमारी,
सद्बोधा[1] है प्रकृतविषया[2] पूर्ण देशोपकारी।
भाषा ही है सकल जगमें सर्वदा सन्निधान,
होती ना तो कर न सकते भावना[3] हृद्विधान[4]॥ १६८

इन्द्रवज्रा

भाषैक्य[5] होता निज राष्ट्रकारी[6],
यूरोप दृष्टान्त मतैक-धारी[7]।
भाषैक्यकी है लिपि एक नींव,
होता इन्हींसे सुकृतार्थ जीव॥ १६९

वसन्ततिलका

कर्त्तव्य है परम आज यही हमारा,
भाषैकतार्थ[8] करना लिपिका सुधारा।
भाषा प्रधान, सब एक लिपिस्थ[9] होना,
होगा यही सकल-भिन्न-विचार-खोना॥ १७०

१ अच्छा बोध देनेवाली अर्थात् शीघ्र समझमें आनेवाली। २ अधिकृत विषया–जिसमें हर कोई विषय ठीक लिखा जाता है वह। ३ चित्तकी भावना–ख्यालात। ४ हृदयके उद्गार। ५ भाषाकी एकता। ६ राज्य करनेवाला। ७ एकमत धारण करनेवाला। ८ एक भाषा होनेके लिये। ९ वर्णमालामें।

सम्पादकें-प्रवरका यह मुख्य काम,
जो हैं समर्थ करने परिपूर्ण कॉम।
हा खेद! देख उनका वह बुद्धि-फेर,
आशा वृथा, समयका यह हेरफेर!॥ १७१

वैश्योपकारक।

वसन्ततिलका

जो अग्रवाल उपकारक जाति-पत्र,
था एक ही कुपथ तापहरातपत्र।
जिसको स्वजाति अजमेर सभा चलाती–
थी जो सुमार्ग चलना सबको सिखाती॥ १७२

शार्दूलविक्रीडित

हो ली थी जब "राम प्रेस" गृहकी थोडी व्यवस्थाँ नवा,
लेके पत्र यहा प्रसिद्ध करना–ऐसा हुआ ध्यान वा।
वैश्योंका उपकारक प्रिय किया, चित्रादिकोंसे सजा,
मैं सम्पादक, रामलाल उसके स्वामी बने बेजजा॥ १७३

१ अच्छ सपादकोंका। २ इच्छा, आशा। ३ इस नामका एक पत्र। ४ मारवाडियोंका। ५ कुरातिका ताप निवारण करनेवाला छत्र। ६ अग्रवाल सभा। ७ तजवाज, तरदद। ८ अग्रवाल–उपकारक। ९ वैश्योपकारक।

भुजंगप्रयात

चला तीन ही मास सोत्साह भारी,
हटे "गमरे लाल" हो बेकरारी ।
उसीसे हुआ छोड़ देना, अगाड़ी—
किसीके हुए हैं कभी मारवाड़ी ? ॥ १७४

वसन्ततिलका

ये मिश्र वैश्य-गुरु "माधवने प्रसाद"
सम्पादक प्रिय "सुदर्शन" साधु-वादे ।
दे हाथ पत्र इनके—ठहरा चलाना,
तौभी यथासमय ठीक कभी चला ना ॥ १७५

हिन्दी साहित्यसभा ।

साहित्यकी कर यहाँ कुछ भी न चर्चा,
पर्चा निकाल किसने कभी की न अर्चा ।
हिन्दी बनी अशरणा, कविता अजान,
उद्धार पूर्ण इनका किसने किया न ॥ १७६

१ मारवाड़ियोंके गुरु । २ भिवानीनिवासी श्री माधवप्रसाद मिश्र । ३ जिनका भाषण या कीर्ति अच्छी है वे । ४ सेवा । ५ आश्रयहीन, निराधार ।

मालिनी

पर इधर वनी थी भावना मिश्र[1]जीकी,
अतिशय शुभ चर्चा हिन्दि साहित्यकी[2] की।
सब सुजन बुलाके स्थापना की सभाकी,
झट नियम बनाके यत्नकी पूर्णता की॥ १७७

भुजगप्रयात

सभाध्यक्ष[3] लाला हुए फूलचन्द[4],
हुए कार्यकारी, बने सभ्य[5] चन्द।
विनेता[6] हुए रूडमल[7] प्रयुक्त,
व्यवस्थाधिकारी[8] हुआ मैं नियुक्त॥ १७८

प्रयाण।

मालिनी

अब अधिक नहीं था अन्नपानी यहाका,
स्थिर हृदय नहीं था, काल था खूब बाका।
झट घर चलनेकी सिद्धता[9] पूर्ण हो ली,
सहृदय[10] सुजनोंके प्रेमकी गाठ खोली॥ १७९

१ माधवप्रसाद मिश्र। २ हिन्दी साहित्यसभा। ३ "प्रेसिडेन्ट" सभापति। ४ लाला फूलचन्द हलवासिया। ५ सभासद, मेम्बर। ६ चलनेवाले, अग्रसर। ७ बाबू रूडमल गोएनका। ८ सम्पादक, सिक्रटर। ९ तैयारी। १० अच्छे दिलवाले।

शार्दूलविक्रीडित

आये स्टेशन पै मिलाप करने सन्मित्र मेरे सभी,
चुन्नीलाल हकीम, टीवरे तथा वे "रामके लाल" भी ।
पीछे बालमुकुन्द गुप्त पहुचे, सारे मिले नेहसे,
गाडी "मेल" चली, चला नयनसे प्रेमाश्रुको मेहसे ॥ १८०

मार्गस्थ स्थानवर्णन ।

वसन्ततिलका

देखा हुआ प्रथम था पुर वर्धमान–
आया, जहा बहु शिवालय शोभमान ।
प्रासाद बाग नृपके रमणीय भारी,
राजा सुशिक्षित यहा जनतापहारी ॥ १८१

मन्दाक्रान्ता

रानीगज, प्रथम यहिं थी रेलसीमा, अगाडी–
ऊटो पैसे उतर इनडे जा वसे मारवाडी ।

१ पंडित चुन्नीलाल शर्मा हकीम । २ बाबू राधाकृष्ण टीवडेवाला । ३ भारतमित्र सम्पादक । ४ आनन्दके अश्रु । ५ मेह जसे, बरसात समान । ६ बर्द्धवान । ७ यहा १०८ शिवालय बहुत सुन्दर बने हुए हैं । ८ प्रजाका दुःख हरण करनेवाला ९ सन १८५७ में रेल यहाँतक थी । १० रेलकी हद ।

खानें भारी विशद निकली कोयलोंकी अपार,
क्या क्या चीजें खनिगत कहा, पा लिया कौन पार? ॥ १८२

वसंततिलका

श्री वैद्यनाथ शिवदर्शन पुण्यकारी–
थे हो लिये, प्रथम बार भवान्तकारी।
मैं हाथ जोड यहिंसे करके प्रणाम–
आगे चला झट मिला पटना सुधाम ॥ १८३

शार्दूलविक्रीडित

क्या था पुष्पपुर प्रधान जगमें? चाहा जहा शर्म्य था,
कैसा शासक चन्द्रगुप्त नृप था, कौटिल्य चाणक्य था?।
मारे नन्द, अमात्य राक्षसें किया मुद्रा मिला युक्तिसे,
हाहा! काल हुई कथा स्मृतिगता, तेरी महा शक्तिसे! ॥ १८४

१ खानोंमे रही हुई। २ शिवजीका एक प्रसिद्ध स्थान है। ३ जन्म मरणका नाश करनेवाला। ४ इस नामका प्रसिद्ध शहर। ५ पटना, पाटलीपुत्र। ६ चाहे सो मिलता था। ७ हुकूमत करनेवाला, राजा। ८ यह प्रसिद्ध सार्वभौम राजा ईसाई सनके ३१५ वर्ष पहिले पटनामें हुआ था। ९ कुटिल नीतिसे चलनेवाला, "पालिसी बाज"। १० इसका असली नाम विष्णुगुप्त था, इसने चन्द्रगुप्तका प्रधान होने पर यह नाम पाया। ११ नव नन्द। १२ प्रधान मन्त्री। १३ इस नामका एक नन्दका प्रधान था। १४ मुहर, सिक्का। इस पर विशाखदत्त कविने "मुद्राराक्षस" नाटक लिखा है। देखने ही योग्य है।

भुजगप्रयात

गयाजी यहाँसे पुरा मैं गया था,
क्रियाकर्म मैंने जहा हा ! किया था।
गवा तीन रत्ने अभी था जनों में,
फिरा था वहीं "शोकके काननों" मे ॥ १८५

मालिनी

छलकर बहु पडे यात्रियोंको सताते,
प्रमुदित[3] बन पूरा श्राद्ध भी ना कराते।
"पितर सरग तेरे हो गये" बोल ऐसा,
कर पर धर मालों छीनते खून पैसा ! ॥ १८६

इन्द्रवज्रा

क्या ये न जानें–अपना भि ऐसा
हो श्राद्ध होगा न बनाव वैसा ?।
हा ! त्रास देते फिर क्यों सताके ?
क्या काल टेढा इनको न ताके ! ॥ १८७

१ स्त्री, पुत्र और कन्या ये तीन रत्न। २ "शोककानन" नामक एक पुस्तक
३ आनन्दित, सन्तुष्ट। ४ फूलोंकी माला–यात्रियोंसे मनमानी दक्षिणा लेनेके लिये श्राद्धक्रिया समाप्त होनेपर गयावाल एक फूलकी माला उनके हाथोंमें डाल देता है और मनमानी दक्षिणा मिलनेपर उनको मुक्त करता है।

पृथ्वी

समीप इसके भली श्रमहरा[1] गया बुद्धकी,[2]
यहीं तप किया कडा निज तनु स्वय शुद्ध की।
स्वधर्म उपदेशक प्रबल था सदा गौतम,[3]
प्रसार जिसने किया स्वर्मतका,[4] हरा हृत्तम[5] ॥ १८८

वसन्ततिलका

जापान, चीन, वह तिब्बत वा सिलोन,
है बौद्ध धर्म इनका, पर है बलोन[6]।
जापान आज विजयी जगदाप्तमान,[7]
है मुख्य बीज निज धर्म-कुलाभिमान ॥ १८९

होता स्वधर्म सबको अति लाभकारी,
वैसा भयावह सदा परधर्म भारी।
सिद्धान्त भूल यह भारतके निवासी,
रो एकता बन गुलाम हुए प्रवासी ॥ १९०

१ त्रास हरण करनेवाली। २ बुद्धगया–यह बौद्ध धर्म संस्थापक ईसाइ सनके ६ सौ वर्ष पहिले विद्यमान था। यह राजपुत्र था। इसके पिताका नाम शुद्धोदन और माताका नाम मायादेवी था। ३ यह बुद्धका नाम था। ४ बौद्धधर्म। ५ हृदयका अंधकार, अज्ञान। ६ बल–ऊन=बलसे कम, कमताकत। ७ जगत्–आप्त–मान=सारे संसारसे जिसको मान मिला है वह।

शार्दूलविक्रीडित

रस्तेमें सह ताप खूब पहुँचा काशी पुरी धामको,
लीने दर्शन विश्वनाथ शिवके देखा परधामको ।
ढुंढीराज, गणेश, भैरव तथा दुर्गान्नपूर्णा शिवा,
अस्सीघाट, पिशाचमोचन, सभी छोडे न देखे सिवा ॥ १९१

उपजाति

देखी पुरी थी यह एक वार,
तोभी लगी सुन्दर वार वार।
जहा तहा नित्य नई सुहावे,
वही खरी सुन्दरता कहावे॥ १९२

भुजगप्रयात

किया जाह्नवी-स्नान पापापहारी,
वहासे सभी घाट-शोभा निहारी ।
बने हैं यहा ये पय पात्र-सीमा,
वहे नीर गम्भीर हो खूब धीमा ॥ १९३

१ श्रेष्ठ स्थान, मुक्तिधाम । २ यह एक गणेशजीका स्थान है । ३ कालभैरवका स्थान । ४ दुर्गादेवी और अन्नपूर्णा । ५ यहा अस्सी नदियोंका सगम है । ६ यह एक तीर्थ है । ७ सुन्दर दीखे । ८ गगास्नान । ९ पानीके पात्रकी हद ।

पृथ्वी

अगाध जलमें किया पुल बडा विचित्राकृति,[1]
विशाल बहु दोतला, विहित विश्वकर्माकृति ।[2]
अहा ! त्रिपथगा[3] यहा बन चतुष्पथा[4] जा रही,
बने पतिपदोत्सुका[5] बहुपथा[6] सती नार[7] ही ॥ १९४

शार्दूलविक्रीडित

जो है पापहरा, पँग, तट धरा-श्रगार[8] पूर्णोदरा,
सहारा भवकी, नितान्त मधुरा-धारा,[9] धरा-सुन्दरा ।[10]
साकारा,[11] रुचिराकृति[12] श्रमहरा, कल्लोलहृन्मोदका,[13]
श्रीकामारिशिरोधरा,[14] प्रियकरा,[15] श्रीविष्णुपादोदका[16] ॥ १९५

१ आश्चर्य कारक है आकार जिसका वह । २ योग्य है विश्वकर्माकी कृति जिसमें अर्थात् शिल्पविद्या पूर्ण जिसमें है । ३ तीन मार्गोके मेलसे बहनेवाली, गगा । ४ चार मार्गवाली , पुलमें चार रस्ते हैं-ऊपर रेलका, नीचे बीचमें गाडीका और दोनों ओर मनुष्योंका ऐसे चार मार्ग हैं इस लिये मानो चतुष्पथा बनी । ५ पतिके पदके लिये उत्कठित । ६ बहुत मार्गवाली । ७ श्रेष्ठ । ८ किनारेकी भूमिका श्रगार । ९ मिष्ट है धारा-पानी जिसका । १० पृथ्वीको सुन्दर करनेवाला । ११ साक्षात्, मूर्तिमान् । १२ सुन्दर है मूर्ति जिसकी वह । १३ तरगसे आनन्द देने वाली । १४ महादेवजीने शिरपर धारण की हुई । १५ प्रिय करनेवाली । १६ श्रीविष्णु भगवान् के पादसे निकली हुई ।

भुजगप्रयात

हरिश्चन्द्रका सत्त्व देखा गया था—
यहीं, कर्वटें ले घनोंने दिया था ।
स्वय जीव प्यारा, मरे मुक्ति पाने[1]
अहा ! कालकी वक्रता कौन जाने ?॥ १९६

वसन्ततिलका

बौद्धाधिकार रहके नव "सारनाथ"[2]
खाली बना, पर किया सबको अनाथ।
इस्लामधर्म-धरने[3] बहु मन्दिरोंको—
तोड स्वय रचि वहीं निज मस्जिदोंको ॥ १९७

शार्दूलविक्रीडित

भूलेंगे न कराल काल ! अतिही उन्माद तेरा कभी,
कूदे शकर कूपमें[4] छिप रहे, भागे पुजारी सभी ! ।
कैसा नाश किया प्रमत्त बनके इस्लामियोंने यहा,
धर्मग्रन्थ जला, स्वधर्म सबका छीना बलात्[5] हाय हा !॥ १९८

१ यहा एक कूप है वहा करवट लेके मुक्तिपानेके लिये श्रद्धावान् लोग आत्मघात करते थे । २ एक पुरातन बौद्धका स्थान । ३ मुसरमानोंने । ४ ज्ञानवापीमें । ५ बलात्कारसे, जबरन् ।

उपजाति

मिला यहाके सब सज्जनोंसे,
इच्छा हुई पूर्ण घने दिनोंसे ।
देखा नया मन्दिर नागरीका—
प्रचारकर्त्री सुख-सागरी का ॥ १९९

वसंततिलका

सारे सभासद जभी प्रयतैक-भाव,
होंगे तभी सफल पूर्ण महानुभाव ।
अच्छा अभी समय है, नव नागरीका—
होने प्रचार बहुधा गुण-आगरीका ॥ २००

उपजाति

हुआ रवाना अब मै यहासे,
जहा तहा देख सुदृश्य खासे ।
श्री विन्ध्यदेवी निकट प्रसिद्ध,
की फेर याद प्रतिमा सुसिद्ध ॥ २०१

१ नागरी प्रचारिणी सभाका । २ सुखके समुद्रका । ३ यत्नपूर्वक एक भाव वाले । ४ सिद्धमनोरथ । ५ सज्जन । ६ अच्छे दिखाव । ७ मिर्जापुरके समीप श्रीविन्ध्यवासिनी देवीका स्थान है वह । ८ मूर्ति, झाकी ।

वसततिलका

आया यहा निग्खने फिर तीर्थराज,
युक्तप्रदेश-नगरी रमणीय आज ।
कौलेज, हार्लै, कटरा, पथ जार्नसेन,
बाजार, चौक—सुथरे सगते किसे न ? ॥

देखा पुरातन यहा खुशरो-बगीचा,
अल्फ्रेड-पार्क उससे पर है न नीचा ।
काशी समान पुल विस्तृत है कमाल,
है "रेल-जकशैन" जहा बहु गोलमाल ॥

वैसा पुरातन किला अति दर्शनीय,
अक्षय्य है वट जहा बहु पूजनीय ।
है पास पापहरणी रुचिर त्रिवेणी[13],
होती पवित्र युवती कर दान वेणी[14]॥

१ प्रयाग । २ पश्चिमोत्तर प्रदेशकी राजधानी । ३ म्यूरकालज । ४ मेयो
५ एक बाजारका नाम है । ६ एक मार्गका नाम । ७ एक पुरातन
शाह्वा बगीचा । ८ सन १८७० में श्रीमान् ड्यूक आफ एडिम्बरोके सन्म
बनाया गया था । ९ रेलवेका पुल । १० बम्बई और दिल्लीसे आनेवाली रे
ट्रेनोंका यहाँ मेल होता है । ११ त्रिवेणी सगमके समीप नदीके किनारे पु
बादशाही किला है । १२ इसी किलेमें प्राचीन पूज्य अक्षय्यवट है । १३
यमुना और सरस्वतीका सगम । १४ चोटी ।

शार्दूलविक्रीडित

वेणीमाधव, वासुकी विरंत है वैसा भरद्वाज हा !
लेटे हैं हनुमान, लोप युत है देवी अलोपी जहा ।
न्हाके सगममें, मिलाप सबका लेके यहासे चला,
आया तीरथ चित्रकूट पथमे, देखा हुआ था भला ॥ २०५

उपजाति

मन्दाकिनी-सुन्दर-रामघाट,
दे स्नानसे मुक्ति-विशाल-बाट ।
परिक्रमा कामदनाथकी है,
झाकी बडी सुन्दर मार्गकी है ॥ २०६

पृथ्वी

पवित्र जलसे भरा भरतकूप, देवागना,
शिला स्फटिककी जहा, चरणपादुका शोभना ।
प्रमोदवन दृश्य है रुचिर, रामका चौतरा,
सुरम्य कपिधार है निरख ले यहा—सो तरा ॥ २०७

१, २ प्रसिद्धस्थान । ३ हटे हुए । ४ एक स्थान । ५ किलके समीप एक हनुमानकी रत लेटी हुई है । ६ देवीका स्थान । ७ यह एक तीर्थ है । ८ नदी परका सुन्दर मघाट । ९ मुक्तिकी चौडी सडक । १० प्रदक्षिणा । ११ इस नामकी पहाडीकी । १२ इ एक स्थान है । १३ यह एक शिला है । १४ यह एक बहुत सुन्दर वन है । १५ हा रामचद्रसे भरत मिले थे । १६ हनुमान धारातीर्थ ।

मालिनी

पुनरपि झट आया खडवा मेल छोडी,
परिचित लघु गाडी सज्ज थी देर थोडी ।
समय पर मङ्को ला उसीने उतारा,
कुछ कुछ चमका है भाग्यका आज तारा ॥ २०८

शालिनी

आके देखा फेर इन्दोर सारा,
रस्तेमेंका खेद सारा विसारा ।
मित्रोंकी ले प्रेमसे भेंट, जाना–
सारा हाल, क्लेशोंका भाग जाना ॥ २०९

उपसंहार ।

मालिनी

सुखद रुचिर ऐसा राजधानी प्रवास,
हितकर बहु ढेके बोध, हो हृन्निवास ।
विगतगति दरिद्री देश सपन्न फेर–
विपुलविभव होने, श्रीपते ! हो न देर ॥ २१०

१ छोटी । २ तैयार । ३ थकावट । ४ दु खका । ५ कलकत्ता । ६ कल्याण करनेवाला । ७ हृदयमें रहने वाला । ८ निस्तेज, प्रभावहीन । ९ बहुत वैभवशाली ।

धन, जन, सुत, दारा, ना चाहें ये हमें हैं,
जनन मरण ना हैं, है कमी ना येही है।
इसमें मनमोहनका तू बसो सुन्दर,
जनन भूमिनाके संगी है उदारे ॥ २११

[illegible]

हे भगवन् जिसका मारवाड़ी-धाम,
प्रकाश धन्य करि है निवास नाम।
जो भ्रमर भाति कुलदीप-सुखद-नाम,
है भूमी भगवान-पदकमल-विहारी ॥ २१२

शार्दूलविक्रीडित

रक्षाबन्धन पूर्णिमा दिन चले रक्षा हमारी प्रभो!
ऐसा दृढ़ वर दीजिये अब चलो, विहार है जिसे जो।
ऐसा नेत्रनमाहमें ठहरिये जो भवन भरा हो भला,
अर्पी है कृति पावनी, शाक तू—शीघ्र भगा दे चला ॥ २१३

ॐ शान्तम्।

१ इस भारतवर्षमें। २ अपना मन। ३ मारवाड़ियोंका। ४ इसी पद्यमें। ५ ईश्वरका संबोधन। ६ जिसका मारवाड़में घर है अर्थात् मारवाड़ी। ७ भ्रमर, भँवरा। ८ भगवान्के पदकमलके रजका विहारी अथवा रामनौ परस्पर रमने वाला। ९ रक्षाबन्धन पूर्णिमा, श्रावण शुक्ला। १० शाक। ११ शीघ्र, जल्द। १२ संवत् १९६२।

शुभ-भावना ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ॐकाराकृति देशको ॐरूपी नित मान ।
नमस्कार उसको करू नम्र-भाव चित आन ॥

मोक्ष न होवे देशका मोह मिटे न अकाज ।
भव-तारक प्रभुके बिना भक्त-भक्त प्रभुराज ॥

गज पाचाली रक्षके गति दी कर निष्काम ।
वक्र कालका काल है वही एक सुख-धाम ॥

तेजोमय प्रभु आप है तेज न मन्द निदान ।
वाणी है कविकी वही वाक्पति काव्यनिधान ॥

सुखका अवसर पायके सुकवि मिलाता देश ।
देशभक्त कवि देशको देवे हृदय—प्रदेश ॥

वाणी उसकी दु खका वाम करे झट दूर ।
यही हरे परतन्त्रता यश देवे भरपूर ॥

॥ श्री ॥

स्फुटपद्यसंग्रह ।

मालती ।

[१]

केसी फूली उपवन-लता[1] मालती चारु-गंधा[2] ?
होके मत्ता[3] सुरभित[4] किया गंध दे, वायु गंधा[5] ।
शोभा भारी निरख इसकी कौन ना मोह पावे ?
हा हा ! ऐसे शुभ समयमें भृंग क्यो छोड जावे ? ॥

[२]

देखे प्यारी निशिदिन अहा ! वाट सोत्कण्ठ भारी,
दुःखी होके सहकर रही बागमें धूप वारी ।
तौभी आया भ्रमर न अभी, लुब्ध जो था स्वतंत्र,
हाहा ! कैसा विधि अदय तू ? की त्रियां अन्यतंत्र ॥

[३]

अब रवि कुसुमोंको रोज इस्के सुखाने,
पवन सुरभि लेके दूरसे भाग जाने ।

१ बगीचे की बेल । २ अच्छे सुवास वाली । ३ मस्त । ४ गंधयुक्त, सुवासिक । ५ गंधहीन, बदबूवाला । ६ भवरा । ७ स्त्री । ८ परतंत्र ।

जलद वरस भारी खून इस्को रुलावे,
पति बिन अबलाको क्यों न कोई सतावे ?॥

[४]

मधुकर[1] अब आया मूढ, सर्वस्व खोया !
विगत-कुसुम-पत्रा[2] मालती देख रोया ।
अब सुरभि कहा है ? पेड सूखा खडा है !
पति विरह कडा है, प्राण-दाही[3] बडा है ॥

[५]

स्त्रीकी शोभा पति है,
वैसी पतिकी स्वकीय नारी है ।
अन्योऽन्य-भावे[4] ऐसा,
नैसर्गिक[5], जनमहोपकारी[6] है ॥

प्रश्नोत्तर ।

मधुर भुवनमें क्या ? कोमला बाल-लीला,
मधुरतर सदा क्या ? कामिनी है सुशीला ।
मधुरतम इन्होंसे ? सत्य शब्दार्थ-माला,
अति रुचिर सदर्था[7] पद्य माला विशाला ॥

१ भँवरा । २ फूल और पत्ते नहीं हैं ऐसा । ३ प्राणोंको जलाने वाला । ४ परस्पर भाव । ५ स्वाभाविक । ६ जन महा-उपकारी=लोगों पर बडा उपकार करनेवाला ७ रुचिर-सत्-अर्था=सुन्दर और अच्छा अर्थ है जिसमें ऐसा ।

चातकी–प्रवाह ।

(चित्तौर-चातकी नामक पुस्तककी गंगाप्रवाह-घटना)

श्लोक ।

(मन्दाक्रान्ता)

कैसा आया कठिनतर हा ! दु:खदायी प्रसंग !
हाहा ! कैसी जल विच बहू ? छोडके तात-संगे ।
ऐसाही था उचित तुमको क्यों दिया जन्म तात !
कैसा मेरा अंत कर रहे ? हाय हा ! प्राण-घाते ॥

गंगाजीका सलिलें गहरा देखके मृत्यु-घाटे,
हा हा ! रोई करुणरवसे चातकी छोड हाट ।
है ना कोई इस जगतमें प्राणसा अन्य प्यारा,
वैसाही ना मरण भयसा क्रूर कोई हत्यारा ॥

(शार्दूलविक्रीडित)

कैसे निर्दय राजपूते ! तुम हो, मैंने बुरा क्या किया ?
देते हो मुझको यहा, कठिन है कैसा तुम्हारा हिया ? ।

१ पिताका सह । २ निर्माण करना । ३ नाश । ४ पानी । ५ जिस घाटपर से बहाई वह, मणिकर्णिका । ६ चित्तौर-चातकी । ७ राजपूत पाक्षिक पत्र ।

स्त्रीका घात किया किसी न नरने, ऐसी न क्यों हो बुरी,
हा हा ! क्षत्रियके न योग्य कृति है ऐसी महा आसुरी[1] ॥

मैं निर्दोष कुलीन शुद्ध मुझको जैसी बनाई बनी,
दोषी है मम तात एक, जगमें कोई न मेरा धनी।
हो जाता यदि मत्कर-ग्रहण[2] वा, कैसे डुबाते? कहो!
स्त्रीका रक्षक कौन है पति बिना, कैसा हि हा! क्यों न हो॥

(मालिनी)

बस बस! अब डूबो बीच गंगा-प्रवाह,
विमल-जल-समाधि-प्राप्ति[3] है स्वर्ग-राह।
सकल अघ[4] तुम्हारा क्षीण होके बसोगी,
अमर-पति-सभामें[5] अप्सरा हो हसोगी!॥

(मन्दाक्रान्ता)

हा हा! डूबी विमल जलमें चातकी हो विरक्त,
रोये सारे विरह-भयसे हा! उपन्यास-भक्त[6]!
ऐसी लीला चरम इसकी देख, ना कौन मोहे?
कैसा चित्र[7] प्रकृत इसका भावना पूर्ण सोहे[8]!॥

१राक्षसी। २मेरा कर हस्त का ग्रहण अर्थात् विक्रय। ३ गङ्गाजल में डूबना। ४पाप। ५ इन्द्रकी सभा। ६ उपन्यासके प्रेमी। ७ चातकीकी चरमलीलाका चित्र "सरस्वती" भाग ४ संख्या ११ पृष्ठ ४०६ पर दिया गया है। उसीका अनुलक्ष्य कर यह कविता लिखी गई है। ८ विद्यमान, अधिकृत।

चतुर्भाषी पद्य ।

(संस्कृत, मराठी, हिन्दी और गुजराती)

श्लोक ।

कृष्णोऽहं नवनीलनीरदरुचिस्त्वं मे प्रिया राधिका,
विद्युद्दामसमा नितान्त रुचिरा आहेस रूपाधिका ।
कैसा योग बना यहां प्रियतमे ! देखो ताडित् मेघका,
जावो खेलिशु आज कुंजवनमां केवो बन्यो ओघ का ? ॥

घालोनि कंठिं तुलसीनिनपुष्पमाला,
हस्ते निधाय सरसां नववंशयष्टिम् ।
संकेत क्यों कर रहा हमको निहार ?
छे कोन धूर्त सखि ! आ ? नहिं नन्द-पुत्र ॥

देखें रम्य वहां प्रफुल्लित तरु, प्रीत्या गतो वाटिका,
होती तेथ मनोज्ञ एक तरुणी, या पुष्पलावी स्थिता ।
जोईने मधुप प्रयत्न करतो, गुंजन्मुखाग्रे भ्रमन्,
हा हा ! हन्त ! पपात मूर्छित-तनुर्जाता भयात्सुन्दरी ॥

क्रीडाकन्दुकसन्निभ निजकरे भूगोलमुद्भ्रामयन्,
ऐसें विस्तृत भूमि-मंडल दिलें मातें, न जेथें रवि ।
होवे अस्त कदापि, अद्भुत अहा ! क्रीडा तुम्हारी प्रभो !
तूं छे धन्य सदा रवी रजनिमा जोवे छ मारी प्रजा ॥

का मे माता ? भरत-वसुधा, जेथ मी जन्मलों की,
तात को मे ? स्वकुलगुरुका धर्म है मोक्षदायी ।
का मे भाषा ? सकलजननी संस्कृता वाऽथ हिन्दी,
का वा विद्या ? भव-भय-हरा वेदवाणी न दूजी ॥

पद्कमल तुम्हारे, फार आहेत गोड,
मरणभय मिटावें, तोडिने कर्म-जाल ।
सकल अघ हमारा, क्षीणता याति तूर्णं,
गुरुवर ! यदि होवे आपका प्रेम पूर्ण ॥

गुलाब ।

अन्योक्ति

(१)

आया गुलाब ! जबसे इस देशमें तू,
सर्वत्र सौरभ दिया बन वश-केतू ।
मोहा न एक अलिही सबको भुलाया,
क्या मोहिनी-सुरभि-साथ अपूर्व लाया ! ॥

(२)

भूले सारे निज कमलको देखके पुष्प तेरा,
मोहे लेके सुरभि, निजको मत्त होके न हेरा ! ।
धीरे धीरे चहु दिशि हुए मान सन्मान तेरे,
प्यारा होके शिरपर चढा खूब काटे बिखेरे ! ॥

(३)

तेरा गंध अपूर्व सुंदर यहा भारी बना कीमती,
जीता रत्न सुवर्णको, हरण की अच्छी सर्नोकी मती।
डाला देश सभी विलास रसमें, स्वातन्त्र्य सारा लिया,
लाके हा! यवन प्रमत्त रिपुको संहार तूने किया!॥

(४)

तेरे पीछे पधारे समय समयमे अन्य देशीय मानो,
तेरीही खोज लेनें विकल बन सदा,हीन हा! दैव जानो।
छीनी सत्ता हमारी धन विभव, हमें दास पूरे बनाके,
हा हा! कैसे सताया? यवन निकरने रोक सर्वत्र नाके॥

(५)

क्या पुष्प थे सुरभि-हीन सभी हमारे,
क्या मालती बकुल चंपक पद्म सारे।
थे ये यहा न? हम मूढ बने विचित्र—
लेके गुलाब पर पुष्प सदा अमित्र॥

(६)

रुचिर रुचि हमारी हो गई आज न्यारी,
कुसुम सम हमारी हो गई देह प्यारी।
अपरिचित हुई है देशकी चीज सारी,
हम सब कुछ भूलें, देश-सेवा विसारी!॥

वसन्तपंचक ।

(वसन्ततिलका)

आवो वसन्त ! तुमसे सब लोग राजी,
फूले पलाश रमणीय गुलाब-राजी ।
होते न मित्र ! जगमें तुम, या न आते,
ऐसे सदा हम कभी हसते न गाते ॥
भाई वसन्त ! तुमने हमको दिया है,
आनन्द-गान, उपकार बडा किया है ।
क्या क्या न मित्र ! तुमको हम दें बधाई,
एकत्र हो सकल खूब मजा उडाई ! ॥

वीणा, मृदंग, करताल, सितार, सार—
ले हाथमें हम करें स्तुति वारबार ।
दुःखश्रमादि सबके हरके, अपार—
दे हर्ष, कौन तब हो न कृतोपकार ! ॥

आनन्द लाभ सम लाभ न अन्य कोई,
लूटा न हाय ! जिसने निज शान्ति खोई ।
देवे वसन्त बिन कौन भला बधाई ?
आनन्दकी सकल ठौर धजा उडाई ॥

(मालिनी)

निज मत मत भूलो, गान अश्लील छोडो,
विनय नय सदाही हर्षके साथ जोडो ।

मधु ऋतु जब आवे हर्ष ना कौन पावे ?
सकल मिल रमावे एकताको बढावे ॥

ग्रीष्मवर्णन।

(शार्दूलविक्रीडित)

आवो ग्रीष्म ! सुहावने तुम बनो, होके वसन्ताऽनुज--
कैसे तापद हो रहे ! किरण ये बर्सायके भानुज ! ।
भ्राताके गुण क्यों लिये न ! उससे क्या हो विरोधी यहा ?
कैसा बन्धु समान मित्र जगमें शत्रु स्वय होय हा ! ॥

शोभा ली वनकी, हरी पवनकी शान्तिप्रदा शीतता,
कीने शुष्क जलाशय, प्रगट की अत्युग्र तेजस्विता ।
चाहें जीव समस्त मस्त मधुको, कोई नहीं आपको,
हा धिक् जीवित ! चाहना न जिसकी, भागी सदा पापको ! ॥

कैसे निर्दय हो ! सभी जन डरे, कोई न लें नामही !
स्त्रीमें प्रेम जरा न मित्र ! तुमको सोहे जिन्होंसे मही ।
देके कोमल हस्तमें व्यजनको, दे त्रास कैसे श्रमी
वारवार करो ? उदास तुमसे सारे गृहस्थाश्रमी ! ॥

(शिखरिणी)

अहा ! कैसी माला कुसुम-रचिता, चन्द्र-किरण,
हमारा फव्वारा, मलयजजत्ताप हरण ।

निराजे अर्धांगी व्यजन-धृत-हस्ता शयनमें,
परन्तु ग्रीष्मर्तु प्रखर करती ताप तनमें॥

(मन्दाक्रान्ता)

जाओ ग्रीष्म! क्षणिक तुम हो, कूच होगा यहासे,
जाओ ऐसी कृति कर सदा मित्र! कोई न हासे।
दोही बातें इस जगतमें या बुरी वा भली है,
पाई शोभा तुम न, मधुकी--क्या किसीको मिली है?॥

मेघ-स्वागत।

(मन्दाक्रान्ता)

आवो आवो प्रिय! तुम यहा, स्वस्ति है मेघराज!
सारे दुःखी तुम बिन सखे! सूझता है न काज।
देके प्यारे! सब जगतको जीवन त्राणकारी,
रक्षो मित्र! प्रणति तुमको, हो प्रजा सौख्यकारी॥

(शार्दूलविक्रीडित)

देखें ये कृषक-स्त्रिया प्रणयसे होके सदा सादर,
नाचें मोर पसार पख, उडके पक्षी करें आदर।
आये चातक सामने, पिक करें सन्मान आलापसे,
श्रीमन्मेघ! दयार्द्र धन्य तुम हो, सारे सुखी आपसे॥

(मालिनी)

प्रणय-कुतुक-नादी सर्व पक्षी, वनश्री–
रुचिर-हरित वेषा हो रही ले घनश्री।
मदन धनुष लेके हो रहा सज्ज भारी,
विधुर जन सताने कान्तहीना सुनारी॥

कर विपुलजला तू आपगा पूर वारि,
कर पवन सदा तू शान्त होके दवारि।
जलद! विपुल देके धान्य, हो मान्य मित्र!
उपकृति सम कोई है न धर्मा पवित्र॥

(वसन्ततिलका)

वर्षा प्रशान्त वनके कर तू कृपाल!
हे मेघ मान्यवर! तू हमको सभाल।
आंधी चला न, चपला मत फेंक नीचे,
दे धान्य तू, सफल खेत बना बगीचे॥

(द्रुतविलम्बित)

बरस मेघ! दया कर जोरमें,
हर अकाल सखे! सब ठौरसे।
भरतभू विकला विनताननाा,
कर सुखी फलदायक-कानना॥

कलकत्तेकी मारवाडी एसोसिएशन ।

दोहा ।

असोसिएशन नामको, मारवाड जन धार ।
कामर्सकी चेम्वर वने, करने देश सुधार ॥

सुनके नाम विचित्र यह, अचरज हुआ अपार ।
क्या भाषा अपनी वनी, शब्द-शेष निःसार ! ॥

खाली लेके नामको, वने हमारे लोग ।
क्या अंग्रेज सुहावने ! करने मौज अजोग ? ॥

क्या कीनो हित देशको, अथवा जाति-सुधार ? ।
धार विदेशी नामको, क्या पायो आधार ? ॥

विद्या सीखी ना गयो, मोह वन्यो अग्यान ।
राहरीति सुधरी नहीं, गाली गीत भडान ॥
अपने मुखसे स्त्री वके, नीच शब्द अश्लील ! ।
शोभा क्या इसमें बढे ? होते जन दुःशील ॥
स्त्रीको शिक्षण क्या दियो, क्या कीनो उपकार ? ।
कितनी बैठी हाटमें, लिया छोड घरवार ! ॥

क्या कीनो परदेशमें, जाकर निज व्यौपार ? ।
क्या बढाय निज धर्मको, कीनो पुण्य-प्रसार ? ॥

"केसर-विलास" हाथमें, ले देखो क्षण एक ।
क्या है चित्रसमाजको, राखो अपनी टेक ॥

ले अंग्रेजी नामको, साहब बनो न आज ।
उन सम उद्यम ठानके, करिये सुखी समाज ॥

श्लोक ।

(शार्दूलविक्रीडित)

कीनो कम्युनिटी भले न, युनिटी कीनी न दे लेक्चर,
खोला ना गृह आर्फनेज, विधवा पाली न, की दुश्वर ।
धार्यो नाम असोसिएशन, बने कामर्सकी चेम्बर,
त्यागे वस्त्र विलायती न पहरे देशी कभी अम्बर ॥

ना कामर्स किया युरोपियनसा खोली कहीं कम्पनी,
खाली चेम्बर खोल नाम धरके की खूब हृत्कम्पनी ।
ना सीखा "यस, नो" विना अधिक वा स्त्रीको दिया शिक्षण,
लेके नाम वृथा रिफार्मर बने, त्यागे न दुर्लक्षण ॥

कन्यापुत्र-विवाहकी न सुधरी रीति, स्वकीयोन्नति,
कीनी न, प्रमदाप्रचार सुधरे, ना धर्ममें सन्मति।
गाने बन्द हुए न शुद्ध कुलमें वे गीत अश्लील था,
खाली नाम "असोसिएशन" लिया! श्रद्धा बढी ना त्वा॥

यात्रा लडनकी अभीष्ट बनने क्या योग्य बेरिस्टर?
क्या बाबू बनने उतार पगडी होके बडे मिस्टर!।
लेडीका कर हाथमें पकडके वार्किंग् तुम्हें इष्ट है?
छोडो ये उनके प्रचार, कृतिको लेवो यही इष्ट है॥

जैसा साहस नाम धार तुमने प्यारे! किया है यहा,
वैसे शीघ्र दिखायिये स्वकृतिको होके यशस्वी महा।
कैसा है अपना समाज पतित—प्रत्यक्ष देखो जग,
दुःखग्रस्त हुआ, कुरीति-पथसे छाई सभी पै जरा!॥

(मालिनी)

प्रभुवर! यह मेरी प्रार्थना हाथ जोड,
मरुधर सुजनोंकी मूढता शीघ्र तोड।
प्रवर कर उन्होंका वंश, विद्या, विचार,
युवति जन सदा हो श्रेष्ठ रीति-प्रचार॥

देश-दशा ।

श्लोक ।

है धर्म, देश, जन सर्व विराजमान,
है भूमि, अन्न, जल, औषधि विद्यमान ।
है शास्त्र सत्पथ अभी सबका समान,
हा, हाय! किन्तु रति क्यों न निजाभिमान? ॥

है आज देश किस घातक वेदनामें!
हा! फूट क्या बढ़ रही बिगडी दशामें ।
कोई सहायक नहीं, किसका न मित्र,
होता चला प्रतिदिन क्षय सच्चरित्र ॥

क्या क्या कुरीति अपने कुलमें चली है,
कैसा सुधार करना? रति क्यों ढली है? ।
भूलें सदा हम हमें, कुल, जाति, देश,
कोई सुने न, करता स्वहितोपदेश ॥

क्या था अपूर्व जगमें अपना स्वदेश?
सर्वोच्च था, धनिक था, कृपि-सत्प्रदेश ।
हाहा! दशा अब हुई इसकी विचित्र,
कोई सहायक नहीं, इसका न मित्र ॥

क्यों जानते न अपना हम देश-काज ?
क्यों हो गया अहह ! लुप्त निजत्व आज ? ।
कैसे बने हम दरिद्र, सुदीन, हीन ?
क्यों बन्धुभाव, समता हमसे विहीन ? ॥

क्यों सद्विचार तजके मति हृत्प्रदेश—
जाके बसे विनय, शिक्षण अन्य देश ? ।
व्यापार हा ! अब कहा ? रति है हमारी ?
भूखे मरें हम सदा कर जानमारी ! ! ॥

सट्टा करें बन दलाल विचित्र धन्धा,
लूटें गरीब—उनको कर खूब अन्धा ! ।
जानें न धर्म अपना, कृपि, वैश्य-वृत्ति,
गोरक्ष्य, देश-हित-कारक सत्प्रवृत्ति ॥

होगा यहा जब कभी प्रभुका प्रसाद,
होगा सुधार तबही हटके प्रमाद ।
हे सर्वशक्ति परमेश्वर ! हे कृपाल !
होके प्रसन्न अब तू हमको सभाल ॥

॥ श्री ॥

प्रवास-कुसुमावलीके प्रथम गुच्छके कुछ अभिप्रायोंका साराश ।

१ श्रीमान् रायबहादुर मुन्शी नानकचन्द साहब, सी आय् ई प्राइम मिनिस्टर, इन्दोर स्टेट–ता० २७–९–०४

एक प्रति "प्रवासकुसुमावली" की पहुची । साद्यन्त पढी । निहायत खुशी हाँसिल हुई । आपकी कविता बहुतही रसीली और सरल है । अगरेजीमे जैसी "कूपर कवि" की तारीफ है वही हाल आपका है । इसी तोरसे आप लिखते रहेंगे तो हिन्दी भाषाकी कविता पुरानी नही होने पावेगी ।

२ श्रीमान् बाबू तुलापतिसिंह, प्राइवेट सेक्रटरी महाराजा दरभङ्गा–ता०–२२–९–०४

I have read it with great interest and have much pleasure in saying that it is worth reading

३ श्रीमान् कमलानन्दसिंह, राजा साहब श्रीनगर पुर्निया–ता०–२५–९–०४

आपकी भेजी हुई "प्रवास-कुसुमावली" कल्की डाकसे मेरे पास पहुची जिसे धन्यवादपूर्वक स्वीकार कर मै अत्यन्त आनन्दित हुआ ।

* * * * मे दत्तचित्त हो आपकी कवितायें आद्यो पान्त पढ़ गया। यद्यपि आजकल समवृत्तमें हिन्दीभाषाकी कविताओंका प्रचार बहुत कम है तथापि आपने अपनी इस रचनाके द्वारा अच्छा कवित्वकौशल दिखलाया है। शब्दको बिना बिगाड़े हुए समवृत्तमें हिन्दीकी शुद्ध कविता करनी सहज नहीं है। मेरी समझमें तो आपकी कविता बहुतही रोचक हुई है और प्रसाद गुणसे भूषित। छन्दमें भी कहीं कुछ गड़बड़ देखनेमें नहीं आता। शब्दविन्यास भी उत्तम रीतिसे किया गया है जो पढ़नेमें अत्यन्त प्रिय मालूम होता है। "प्रवासकुसुमावली" से इतिहास सम्बन्धी अनेक बातें विदित होती हैं, और भी कई प्रकारके नये नये भाव व्यञ्जित होते हैं। "चातरी प्रवाह" पर जो आपने कविता की है वह विशेष हृदयग्राहिणी हुई है। चतुर्भाषी पद्य भी भावसगठित है तथा आपकी अनेक भाषाका पाटव तथा कवित्वशक्तिका अभिव्यंजक है।

आपका एतद्विषयक उत्साह और परिश्रम सर्वथा प्रशसनीय है। इसमें कुछ सदेह नहीं कि आपने मारवाडी बोलीमें भी "केसरविलास" आदि अनेक पुस्तकें रचकर अपने देशका गौरव बढ़ाया है।

८ पंडित माधवप्रसाद मिश्र, भिवानी–ता० २५–९–०४

आपकी प्रवासकुसुमावली कुसुमोंकी आवली होने परभी हृदयहारिणी कुसुममाला है। जितनी यह अभिनव है उतनी पुरातन इतिहासकी अभिव्यंजक है और जितनी सरल है उतनी रसवती है। आपका यह पुष्पहार किस रसिकके हृदयका आभूषण न होगा और किस सहृदयके कण्ठकी शोभा न बढ़ावेगा?

५ श्रीमान् मुन्शी देवीप्रसाद साहब, जोधपुर–ता०–२८–९–०४

* * * आपकी कविता खडी बोलीमें है इससे उस उद्देश्यकी खूब उन्नति होगी जो देशहितैषी लोग कर रहे है। इतिहासके प्रमाणभी आपने ठीक दिये हैं। * * * * *

६ भारतजीवन, काशी–ता०–२६–९–०४

मारवाडियोंके सुधारके लिये मारवाडी भाषामें पुस्तकें लिखनेवाले अग्रदर्शी बाबू शिवचन्द्र भरतियाने यह "प्रवास–कुसुमावली" हिंदी कवितामें लिखी है। कविता सस्कृत वृत्तोंमें है और सरल, उपयोगी है नमूना देखिये–

* * * * *

कविता पढते समय स्थान स्थानपर कविकी योग्यता, देशहितैषिताका स्पष्ट परिचय मिलता है। पुस्तककी छपाई सफाई बहुत बढिया है। * * * * * हम अपने पाठकोंसे अनुरोधपूर्वक कहते है कि वे एकवार इस किताबको अवश्य देखें।

७ श्रीवेंकटेश्वर समाचार, बम्बई–ता०–१४–१०–०४

हिन्दीके पाठक बाबू शिवचन्द्र भरतियासे अपरिचित नहीं हैं। आपने जिस प्रकार मराठी कवितामें नाम पाया है, मारवाडी बोलीमें पुस्तकें लिखकर प्रशसाका काम किया है, उसीप्रकार सस्कृतपद्यरचनाकाभी अभ्यास करके हिंदीमें कविता करनेमें सफलता प्राप्त की है। यह प्रवास कुसुमावली उन्हीं बाबू शिवचन्द्र भरतिया की लिखी हुई है। इसमें उन्होंने अजमेर, कृष्णगढ, जयपुर, मे-

वाड और जोधपुरकी यात्राका वर्णन तथा वहाके देखे हुए दृश्योंका चित्र खडी बोलीके गणवृत्तोंमें किया है। * * * कोई कोई पद्य ऐसे है जो हृदयको बिल्कुल तल्लीन बना देते है। विशेषकर ६१ से ६७ तककी कविता तो बहुतही अच्छी बनी है। अन्तमे मालती और चातकीप्रवाहकी कविता दी गई है। चातकीप्रवाहकी कविता पढतेही उपन्यासी अगडेकी सब बातें ताजी हो जाती हैं और चातकीका विलाप हृदयमें ऐसा स्थान कर लेता है कि सहसा ईश्वरसे यही प्रार्थना करनेकी इच्छा होती है कि हे ईश्वर! हिन्दीके लेखकोंको सुमति दे जिससे अब चातकीकी ऐसी घृणित पुस्तके हिन्दीमें न निकलें और न हिन्दी साहित्यमें इस प्रकार पुस्तकप्रवाहकी घटनाका अवसर आवे। * * * *

८ श्रीमान् सेक्रेटरी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी—

ता०—७—७—०५

आपकी प्रवास-कुसुमावलीका नाम सभाने इस वर्षकी प्रशसित पुस्तकोंमें सम्मिलित किया है और इसका उल्लेख इस वर्षकी वार्षिक रिपोर्टमें होगा।

९ केसरी, पुना—ता०४—१०—०४

प्रवासकुसुमावली—(हिन्दी) हें शिवचन्द्र भरतिया यांनीं लिहिलें सदर गृहस्थास मारवाडी, मराठी, हिन्दी व सस्कृत भाषा उत्तम येत असून त्या चारही भाषांत त्यांनीं काव्यें केलीं

आहेत. ह्या पुस्तकात श्लोकादि वृत्तात हिन्दीमध्यें कविता करण्याची नवी प्रवृत्ति यानीं घातली आहे

:० काळ, पूना-ता०-१-२-०५

प्रवासकुसुमावली -हें एक हिंदीमधील कवितांचे पुस्तक आहे शिवचद्र भरतिया हे ह्याचे कर्त्ते आहेत सस्कृतमधील वृत्तें घेऊन यानीं हिंदीमध्यें सुलभ पद्यरचना केलेली आहे पुस्तकाचें बाह्याग आणि अतरग दोन्ही मधुर आहेत

॥ श्री ॥

मारवाडी भापाकी अपूर्व पुस्तके

इनाम १०००) रुपया ।

(मारवाडी भापामें एक नई चीज)

फाटकाजजाल नाटक ।

मारवाडी भापा तो कुछ चीज नहीं—परतु बगाली, मराठी, गुजराती अथवा हिन्दीमेंभी इस नाटकके समान आगे छपी हुई पुस्तक कोई महाशय दिखा देगा तो उसको उपर्युक्त इनाम दिया जावेगा ।

इसमें मारवाडी जातिकी गृहस्थिति, चालचलन, रहनसहन तथा व्यापार आदिका—पाच मनोहर फोटूके चित्रोंके साथ भावपूर्ण उपदेशमय चित्र खींचा गया है, जिसको पढतेही चकाचौंध दूर होके हृदयमें प्रकाश पड जाता है ।

इस पुस्तककी जिल्द पक्की, रगबरगी कीमती कपडेकी तीन सुनहरी नामों सहित और ऊपर भगवान श्रीकृष्णचद्रकी मनमोहनी मूर्त्तिके साथ बनाई गई है जिसको देखतेही मन मुग्ध हो जाता है । डेमी साइजके २६० से अधिक पृष्ठ हैं । छपाई मोठे अक्षरोंमें बहुतही साफ और सुन्दर है । देशी भापाओंमें शायदही कहीं ऐसी पुस्तक छपी हो ! ।

कीमत रुपया २) डाक खर्च ।=)

बुढापा की सगाई नाटक ।



इसमें–मारवाडी जातिमें सगाईके क्या प्रकार होते है, बचपनमें सगाई करनेसे क्या क्या अनर्थ होते है–उसका चित्र खींचा गया हे । स्त्रियोंकी स्वतन्त्रताकी सीमा, उसका परिणाम, वृद्धावस्थामें विवाहकी इच्छा, उसका बंधन और उस बंधनका परिणाम जहा तहा प्रदर्शित किया है ।

पुस्तकमें सर्वत्र नीति, उपदेश, बोध, धर्म ओर शास्त्रका विचार किया हे । भाषा इतनी सरल ओर स्वाभाविक रक्खी गई हे कि उसकी कृत्रिम रचनाका कुछ भास नहीं होता । और मानो यह कोई सत्य घटना है ऐसा प्रतीत होता है ।

पुस्तक बहुत सुन्दर अच्छे कागजपर छपी है । सवासोसे अधिक पृष्ठ हैं। कीमत ।=) आना डाक खर्च =) आना ।

पुस्तकें अब बहुत थोडी रह गई है इस लिये जल्द मंगाकर इससे आनन्द लाभ करें ।

कनक सुन्दर ।



यह एक मारवाडी भाषाका एकमात्र भावपूर्ण उपन्यास है । इसमें ईमानदारीसे व्यापारमें मनुष्य कैसी तरक्की ओर धन कमा सकता है उसका खाका खींचा गया है ।

हमें पूर्ण विश्वास हे कि इस पुस्तकके उपदेशके अनुसार चलनेवाला अवश्यही धनसम्पन्न होके अपना और अपनी जातिका अच्छा सुधार कर सकेगा।

पुस्तक सुंदर फोटोके चित्रके साथ बहुत सुन्दर छपी है । कीमत ॥) डाक खर्च =) आने ।